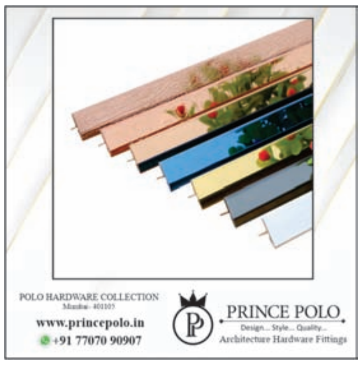

Carpenter's monthly newspaper

www.carpentersnews.com

कारपेंटर्स न्यूज

मासिक समाचार पत्र

R.N.I.No.MAHHIN/2005/16460 | Postel Regd. No. MCW/321/2025-27
Posted at Delisle Road, Mumbai-400013. On 20th of Every month | Published on Every 10 th day of the month

मुंबई | जून 2026 | वर्ष : 21 | अंक : 07 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

सालों की मेहनत और बारीक नक्काशी, सहारनपुर फर्नीचर बन गया खास .... पेज - 2

सालों की मेहनत और बारीक नक्काशी, सहारनपुर फर्नीचर बन गया खास

जयपुर। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में तैयार होने वाला हैंडमेड फर्नीचर जयपुर में लोगों की पहली पसंद बना हुआ है। यही वजह है कि सहारनपुर के कारीगर और व्यापारी अपने फर्नीचर के साथ जयपुर के अलग-अलग शॉपिंग फेस्टिवल और मेलों में लगातार पहुंचते रहते हैं और साल भर में लाखों रुपए की कमाई करते हैं। सहारनपुर से आए कारीगर दानिश बताते हैं कि सहारनपुर फर्नीचर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि छोटे से लेकर बड़े हर फर्नीचर को पूरी तरह हाथों से तैयार किया जाता है।

इसी वजह से सहारनपुर का फर्नीचर अपनी सुंदरता, मजबूती और बारीक नक्काशी के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है। अलग-अलग पेड़ों की मजबूत लकड़ी पर की गई बारीक डिजाइनिंग इसे खास बनाती है, जिस कारण जयपुर में इसकी मांग लगातार बनी रहती है।

सहारनपुर में फर्नीचर का काम पीढ़ी दर पीढ़ी किया जा रहा है। वर्षों से लोग इस कारीगरी को आगे बढ़ाते आ रहे हैं, जिससे आज भी हजारों लोगों को रोजगार मिल रहा है। जयपुर, दिल्ली, मुंबई और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में सहारनपुर फर्नीचर की भारी मांग रहती है। सहारनपुर फर्नीचर में खासतौर पर शीशम, सागौन और नीम की लकड़ी का उपयोग किया जाता है, जिससे फर्नीचर में सुंदरता के साथ-साथ मजबूती भी बनी रहती है। फर्नीचर तैयार करने से पहले लकड़ी को पूरी तरह तैयार करने में ही 2 से 3 साल का समय लग जाता है। गीली लकड़ी को पहले सुखाया जाता है, इसके बाद उस पर कटिंग, नक्काशी और पॉलिशिंग का बेहद बारीकी से काम किया जाता है। जब जाकर फर्नीचर पूरी तरह तैयार होता है। सहारनपुर फर्नीचर में लकड़ी की कीमत ही लाखों रुपए तक होती है, इसलिए लकड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा भी बेकार नहीं जाने दिया जाता। हर हिस्से का किसी न किसी फर्नीचर या सजावटी आइटम में उपयोग किया जाता है। सहारनपुर फर्नीचर में किचन से जुड़े सामान और घरेलू सजावट की वस्तुओं की भी खूब मांग रहती है, जिनकी कीमत 20 रुपए से लेकर हजारों रुपए तक होती है।

प्लाईवुड गोदाम में भीषण आग

कानपुर। जिले में घनी आबादी वाले सीसामऊ इलाके में संगीत टॉकीज के पास प्लास्टिक फर्नीचर और प्लाईवुड के एक गोदाम में भीषण आग लगने से व्यस्त बाजार क्षेत्र में हड़कंप मच गया। आग लगने के बाद कुछ ही मिनटों में लपटों ने पूरे स्टॉक को अपनी चपेट में ले लिया। आग से उठा काला धुआं करीब दो किलोमीटर ऊंचाई तक दिखाई दिया, जिससे पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। संकरी गलियों और भीड़ भाड़ के कारण दमकलकर्मियों को आग बुझाने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। दमकल विभाग के अनुसार आग दोपहर में गोदाम में लगी और तेजी से प्लास्टिक की कुर्सियों, फर्नीचर तथा प्लाईवुड के बड़े स्टॉक में फैल गई। स्थानीय लोगों के अनुसार, धुएं के कारण दृश्यता बेहद कम हो गई थी।

स्थानीय लोगों का दावा है कि फर्नीचर वाले गोदाम में बिजली कनेक्शन नहीं था, जिसके चलते आशंका जताई जा रही है कि भीषण गर्मी या किसी बाहरी चिंगारी से आग लगी हो सकती है।

यूरो 7000 ब्रांड को यूपी के 75 जिलों तक पहुंचाने का संकल्प

लखनऊ। ज्योति रेजिंस एंड एडहेसिव लि. की ओर से 21 मई को लखनऊ के ओरनेट बैंक्वेट हॉल में 300 से अधिक रिटेलर्स की एक भव्य मीटिंग का आयोजन किया गया। कंपनी अपने प्रतिष्ठित ब्रांड यूरो 7000 वुड एडहेसिव का निर्माण करती है। इस कार्यक्रम को कंपनी के सभी कर्मचारियों व अधिकारियों द्वारा करीब 300 रिटेलर्स के सहयोग से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर अहमदाबाद मुख्यालय से पधारे जोनल सेल्स मैनेजर दीपक शाह ने बताया कि कंपनी का लक्ष्य यूरो 7000 ब्रांड को उत्तर प्रदेश में नई ऊंचाइयों तक ले जाना है। वर्तमान में ज्योति रेजिंस पूरे भारत में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है। कार्यक्रम में एवीपी पंकज श्रीवास्तव और उनकी टीम ने उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में यूरो 7000 ब्रांड को पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया। 300 से अधिक रिटेलर्स की सक्रिय भागीदारी इस कार्यक्रम की सफलता का मुख्य आधार रही। कंपनी अपने मिशन और विजन के साथ उत्तर प्रदेश की अग्रणी कंपनियों की पंक्ति में शामिल होने के लिए प्रतिबद्ध है।

EURO 7000 Wood Adhesive

कारपेंटर्स न्यूज

RNI NO. MAHHIN/2005/16460

कारपेंटर्स न्यूज में विज्ञापन या प्रतियों के लिए 9320566633 पर संपर्क करें।
Email: carpentersnews@gmail.com

फिल्म बंग को मिले तीन पुरस्कार

मुंबई। बाफ्टा पुरस्कार विजेता मणिपुरी फिल्म बंग ने हाल ही में न्यूयॉर्क भारतीय फिल्म महोत्सव में तीन पुरस्कार अपने नाम किए हैं। इनमें मुख्य भूमिका निभाने वाले युवा कलाकार को दिया गया। इसमें सर्वश्रेष्ठ बाल अभिनेता का सम्मान भी शामिल है। यह महोत्सव 28 से 31 मई तक आयोजित हुआ, जिसमें 15 भाषाओं की विविध फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

मुंबई	जून 2026	वर्ष : 21	अंक : 07	पृष्ठ : 16	मूल्य : 2 रुपए

EVERY DOOR DESERVES A
dorsët
MORE SAFE. MORE SECURE.
dorsët MITRON
Saath Umar Bhar Ka!

डॉर्सेट WAVE

आसान फिटिंग
स्मार्ट कॉर्नर स्टोरेज
खुश कस्टमर

ज्यादा स्कैन, ज्यादा रिवॉर्ड्स
अब हर कॉर्नर बनेगा फायदे का!

आज ही रजिस्टर करें और पहले स्कैन के साथ
250
बोनस अंक सुनिश्चित करें

PAN/ AADHAR से लॉयल्टी प्रोग्राम जॉइन करें।

डोरसेट मित्रों ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

पुरस्कार जीतने हेतु मित्रों वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

हमें फॉलो करें:

Dorset India

MITRON HELPDESK SUPPORT
1800 2022 434
mitronsupport@dorsetindia.com

स्वदेशी वित्त सलाहकार परिषद की व्यावसायिक बैठक और संवाद

मुंबई। स्वदेशी वित्तीय सलाहकारों की ओर से राष्ट्र निर्माण व आर्थिक विकास में सामूहिक योगदान देने के उद्देश्य से स्वदेशी जागरण मंच के अधीनस्थ गठित स्वदेशी वित्त सलाहकार परिषद की पहली व्यावसायिक बैठक व संवाद का आयोजन गोरेगांव (पश्चिम) टोपीवाला स्थित नारायण भवन में संपन्न हुआ। बैठक का शुभारम्भ भारत माता के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम गान के साथ हुआ।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि स्वदेशी जागरण मंच व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रचारक सतीश कुमार ने अपने वक्तव्य में स्वदेश, स्वदेशी और स्वाभिमान के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक चेतना और स्वदेशी सोच में निहित होती है। यदि भारत को विश्व में अग्रणी राष्ट्र बनाना है, तो हमें अपने उत्पादों, संसाधनों, ज्ञान और आर्थिक व्यवस्था पर विश्वास बढ़ाना होगा और स्वदेशी विचार को जन-जन तक पहुंचाना होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि स्वदेशी वित्त सलाहकार परिषद सीए कमल पोद्दार के सक्षम नेतृत्व में एक अनुकरणीय संगठन के रूप में विकसित होगी और राष्ट्रहित, स्वदेशी विचार और आर्थिक आत्मनिर्भरता को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करेगी।

पंजाब नेशनल बैंक के सेवानिवृत्त जनरल मैनेजर व स्वर्णिम भारत फाउंडेशन के चेयरमैन सतीश कुमार चावला ने वर्तमान समय में उत्पन्न ऊर्जा संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऊर्जा संरक्षण आज केवल आर्थिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दायित्व बन चुका है। उन्होंने उपस्थित जनों को दैनिक जीवन में संसाधनों के संयमित उपयोग के लिए शपथ दिलवाई। उन्होंने सभी उपस्थित लोगों को यह संकल्प भी दिलवाया कि वे ऊर्जा की बचत हेतु छोटे-छोटे लेकिन प्रभावी कदम अपनाएँगे, जैसे अनावश्यक बिजली उपकरणों को बंद रखना, ऊर्जा दक्ष साधनों का उपयोग करना तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाना।

स्वदेशी वित्त सलाहकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीए कमल पोद्दार ने कहा कि स्वदेशी वित्त सलाहकार परिषद प्रतिभा और संसाधनों के बीच समन्वय स्थापित करने की दिशा में कार्य करेगी। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि विदेशी फर्में हमारे संसाधनों, ज्ञान और डेटा पर कब्जा जमाए बैठी हैं, जबकि हमारा उद्देश्य यह है कि स्वदेशी हमारे आर्थिक व वित्तीय निर्णयों का अनिवार्य अंग बने। हमारा यह प्रयास किसी को छोटा दिखाने का नहीं, बल्कि एक बड़ी रेखा खींचने का प्रयास है। उन्होंने आगे कहा कि इस परिषद का उद्देश्य एक समृद्ध,आत्मनिर्भर,विकसित और महान भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाना है, जहाँ भारतीय कंसल्टिंग फर्म वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करें। वित्तीय सलाहकार सरकार की नीतियों और उद्योग जगत के बीच संतुलन स्थापित करते हुए राष्ट्रहित में कार्य करें। परिषद के पदाधिकारी राजेश तेहरा ने संगठन के उद्देश्यों, भावी योजनाओं एवं आगामी क्रियाकलापों की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि परिषद वित्तीय क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों को एक साझा मंच प्रदान कर राष्ट्रहित में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करेगी।

समारोह में स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय कोष प्रमुख बलराम नंदवानी, राष्ट्रीय महिला प्रमुख रोहिणी भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में पंकज भावसरा ने सभी अतिथियों, पदाधिकारियों व उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

भाषा के विरोध से वोट तो मिलेगा लेकिन हमारी ज्ञान परंपरा होगी खत्म

मुंबई। हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष समारोह में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि भाषा के विरोध से वोट तो मिलेगा लेकिन हमारी ज्ञान की परंपरा खत्म हो जाएगी। प्रभादेवी स्थित रविंद्र नाट्य मंदिर में मुंबई हिंदी पत्रकार संघ की ओर से आयोजित हिंदी सेवा सम्मान समारोह में उन्होंने कहा कि दुनिया की सबसे पुरानी भाषा तमिल है। हमारी विभिन्न भाषाओं के कारण ही हमारी सभ्यता अखंडित बनी हुई है। उन्होंने कहा कि दुनिया के विकसित देश अपनी मातृ भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाये, जबकि हमारे देश पर विदेशी भाषा थोपी गई।

हिंदी सेवा सम्मान समारोह का आयोजन

अंग्रेजी में पढ़कर कोई साहब नहीं बन सकता, हमें प्राथमिक शिक्षा मातृ भाषा में देना होगा। फडणवीस ने कहा कि आजादी के समय स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता की अग्नि प्रज्वलित करते थे। पहला हिंदी अखबार उदन्त मार्तण्ड बंगाल से निकाला गया। हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला हुआ है, हिंदी भाषा देश को जोड़ती है। लेकिन हमें दूसरी भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए। आज के दौर में बहुभाषी होना बहुत महत्वपूर्ण है। मराठी भाषी बाबूराव पराड़कर ने उत्तर प्रदेश में जाकर हिंदी की सेवा की और दशकों तक संपादक का दायित्व निभाए।

पत्रकारों को नसीहत देते हुए उन्होंने कहा कि पत्रकारों को भ्रामक खबर देने से बचना चाहिए। पत्रकार समाज का आईना होता है, इस लिए पत्रकारों को किसी भी खबर के तथ्यपरक के बाद ही प्रकाशित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस समय सोशल मीडिया में फर्जी खबरों का दौर चल रहा है। वर्तमान में पत्रकारिता संक्रमण की अवस्था से गुजर रही है लेकिन आने वाले दिनों में पत्रकारिता अपने सामाजिक दायित्व मूल्यों के साथ जनता के बीच फिर स्थान बनाएगी। यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि वर्तमान में पत्रकारिता कठिन दौर से गुजर रहा है। उतर चढ़ाव के बावजूद हिंदी पत्रकारिता अपने अस्तित्व को बरकरार रखा है। उन्होंने कहा कि हिंदी हृदय से निकलता है लेकिन हमें क्षेत्रीय भाषाओं के साथ चलना होगा।

मुंबई भाजपा अध्यक्ष विधायक अमित साटम ने कहा कि 1826 में हिंदी का पहला हिंदी अखबार निकाला गया। पूरी दुनिया में तीसरी भाषा हिंदी बोली जाती है। हिंदी भाषा ही नहीं बल्कि एकता का प्रतीक है जो देश को एक सूत्र में बांधती है।

इस अवसर पर पत्रकारिता क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पत्रकार गंगाधर ढोबले, हेमंत तिवारी, कुमुद संघवी चावरे, अवधेश व्यास, राम मोहन पाठक व फि ल्म अभिनेता विनीत कुमार सिंह को हिंदी सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया।

समारोह में कौशल विकास मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, मुंबई भाजपा महामंत्री आचार्य पवन त्रिपाठी, विधायक राजहंस सिंह, विधायक मुरजी पटेल, विधायक संजय उपाध्याय, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद सिंह, पत्रकार हरिगोविंद विश्वकर्मा, आदित्य दुबे, विजय सिंह कौशिक आदि उपस्थित रहे।

पद्मश्री महेंद्र कपूर पुरस्कार समारोह

महाराष्ट्र आइकॉन अवॉर्ड से जाने-माने लोगों को किया गया सम्मानित

मुंबई। इंटरनेशनल थिएटर एंड स्पोर्ट्स फाउंडेशन और बालगंधर्व स्मारक समिति की ओर से प्रभादेवी स्थित रवींद्र नाट्य मंदिर में पद्मश्री महेंद्र कपूर पुरस्कार समारोह में पार्श्व गायक सुरेश वाडकर को पद्मश्री महेंद्र कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि महेंद्र कपूर के नाम पर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड पाकर मुझे खुशी हो रही है, मैं उन्हें पापाजी कहता था, वे मुझे बेटे की तरह प्यार करते थे, हम साथ में गाने गाते थे।

अभिनेता बोमन ईरानी ने कहा कि छात्र जीवन में मैंने महेंद्र कपूर को सुना था तबसे उनके गानों का मैं दीवाना हूँ। उन्होंने कहा की महेंद्र कपूर ने अपने जीवन में किसी को ऊँचा बड़ा नहीं देखा, सबको सम्मान देते रहे। समारोह में सोशल, कल्चरल, आर्ट और स्पोर्ट्स क्षेत्र में योगदान के लिए भी पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर गायक शहजाद अली, क्रिकेटर दिलीप वेंगसरकर, सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय के डायरेक्टर जनरल बृजेश सिंह, डॉ. मंजू मंगल प्रभात लोढ़ा, स्लम रिहैबिलिटेशन अथॉरिटी के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर महेंद्र कल्याणकर, समाजसेवी डॉ. सायली पालखेडकर, महाराष्ट्र स्टेट फिल्म, थिएटर और कल्चरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन की मैनेजिंग डायरेक्टर स्वाती म्हसे पाटील, क्राइम ब्रांच के डिप्टी कमिश्नर बजरंग बनसोडे, संतोष जाधव, सिंगर जत्थेशन लामा, देवेनश्री, पेंटर शेखर साने, एंटरप्रेन्योर विशाल चोरडिया आदि को महाराष्ट्र आइकॉन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। समारोह में महेंद्र कपूर के पुत्र रोहन कपूर भी मौजूद रहे। समारोह में काली चरण महाराज ने शिव तांडव की प्रस्तुति कर उपस्थित जनसमुदाय को मंत्रमुग्ध कर दिया।

धर्म मात्र अनुष्ठान का नहीं अपितु आचरण का विषय – स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज

काशीपुर। श्री हरि कृपा पीठाधीश्वर व विश्व विख्यात संत स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने गढीनेगी स्थित हरिकृपा धाम में अपने जन्मोत्सव पर आयोजित विराट धर्म सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा धर्म के अनुष्ठान (कथा, प्रवचन यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि) तो बढ़े हैं, लेकिन आचरण अपेक्षाकृत उतना नहीं बढ़ा। जबकि धर्म मात्र अनुष्ठान का नहीं अपितु आचरण का विषय हैं। उन्होंने कहा भारतीय संस्कृति त्याग, सेवा व परोपकार की भावना से ओत-प्रोत है। कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करें। स्वामीजी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे अपने संस्कार व संस्कृति से जुड़कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें। आपसी सद्भाव, सहयोग व सेवा की भावना से ही विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

विशाल भक्त समुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम विश्व बंधुत्व व विश्व के कल्याण की भावना रखते हैं परंतु उससे पूर्व अपनी जन्मभूमि भारत मां की समृद्धि व खुशहाली की कामना करते हैं। हम अपने प्रति दूसरों के द्वारा किए अपराधों को क्षमा कर सकते है परंतु अपनी भारत मां के प्रति, मानवता के प्रति किये अपराधों को कदापि क्षमा नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि समस्त विश्व संभावित भयानक युद्ध के यंत्रणा काल से गुजर रहा हैं। ऐसे में हम सभी राष्ट्रवासियों को समस्त प्रकार की संकीर्णताओं व मतभेदों को त्यागकर आपसी प्रेम, एकता व सद्भाव को बनाए रखना है। राष्ट्र व समाज को विभिन्न आधारों पर तोड़ने व बांटने की नीच कुत्सित व घृणित साजिशों को सफल नहीं होने देना है। हम सभी को आत्म अन्वेषण करना चाहिए कि राष्ट्र के उत्थान, विकास के लिए, आजादी को बरकरार रखने व शांति का साम्राज्य स्थापित करने में हमारा क्या योगदान है। हम सभी देशवासी ऐसा संकल्प लें कि शहीदों की कुर्बानियों को व्यर्थ न जाने दें।

भारत वर्ष तब का भारत वर्ष नहीं आज हमारी

सैन्य शक्ति दुनिया में बहुत मजबूत है। हमने कभी युद्ध नहीं चाहा, हम पर हमेशा युद्ध थोपे गए। भारत सर्वे भवन्तु सुखिनः व विश्व बंधुत्व का भाव रखता है, पृथ्वी ही नहीं संपूर्ण ब्रह्माण्ड में शांति चाहता है। भारत जैसे पवित्र राष्ट्र में जहां श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे अवतारों ने गाय की सेवा व पूजा करके महिमा प्रतिष्ठापित की हो, वहां गायों की दुर्दशा व गौ हत्या शर्मनाक है, जिस पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिये। जिस देश में वर्ष में दो बार नवरात्रि व विभिन्न मांगलिक अवसरों पर कन्या पूजन किया जाता है, वहां कन्या भ्रूण हत्या जैसा जघन्य अपराध निंदनीय व शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि आज लोग अधिकारों के लिए जागरूक हुए है अच्छी बात है लेकिन राष्ट्र व समाज के लिए अपने कर्तव्यों को भी पहचानें व पालन करें, तो और भी अच्छा होगा। समाज की विभिन्न जटिलतम समस्याओं का राजनीतिकरण न करके आपसी प्रेम मेलजोल व सौहार्दपूर्ण वातावरण में सुलझाने का प्रयास करें। समारोह में सांसद अजय भट्ट, सुखदेव नामधारी, जसपुर विधायक आदेश चौहान, भागीरथ लाल चौधरी, हेम भट्ट, कश्मीर सिंह आदि मौजूद रहे।

जायका इंडिया का

पुदीना शाही पुलाव

सामग्री - 2 कप बासमती चावल, 1 कप ताजा पुदीना पत्ते का पेस्ट, 2 (लंबे पतले कटे हुए) प्याज, आधा कटोरी दही, 15-20 टुकड़े काजू, 8-10 बादाम, 2 (बारीक कटी हुई) हरी मिर्च, गार्निश के लिए हरा धनिया, 1 चम्मच हल्दी पाउडर, 1 चम्मच धनिया पाउडर, 1 चम्मच बिरयानी मसाला, 1/2 चम्मच जीरा, 1/2 चम्मच राई, 4-5 पत्ते करी पत्ता, 2 तेजपत्ता, 2 टुकड़े दालचीनी, 4-5 काली मिर्च, 2-3 लौंग, फ्राई करने के लिए देसी घी।

विधि - सबसे पहले बासमती चावल को अच्छी तरह पानी से धोकर करीब 15 मिनट के लिए भिगो दें। इसके बाद एक तरफ प्याज और हरी मिर्च को बारीक काट लें। फिर पुदीना की पत्तियां साफ करके धो लें और उनको ग्राइंडर में डालकर पीस लें। अब गैस पर प्रेशर कुकर रखकर उसमें देसी घी डालकर गर्म करें। घी थोड़ा गर्म हो जाने के बाद इसमें काजू और बादाम डालकर हल्का भून लें और प्लेट में निकाल लें। थोड़ा घी डालकर अब इसमें जीरा, राई, करी पत्ता, तेजपत्ता, लौंग, दालचीनी और काली मिर्च डालकर भून लें। कटे हुए प्याज डालकर हल्का ब्राउन होने तक भून लें। प्याज भूनने के बाद पुदीने का पेस्ट डालकर फिर भूनें। अब इसमें बिरयानी मसाला, हल्दी, धनिया पाउडर, गरम मसाला और नमक डालकर चलाना है। इसके बाद इसमें थोड़ा फ्रेश दही फेंटकर डालें और पानी डालकर चलाएं और भीगे हुए चावल और ड्राई फ्रूट्स डालकर मिक्स करें, साथ ही चावल के अनुसार पानी डालकर कुकर का ढक्कन बंद कर दें। एक या दो सीटी आने के बाद कुकर खोलकर ऊपर से घी डालकर प्लेट में निकालें और धनिया पत्ती से गार्निश कर सर्व करें।

मिक्स वेज खिचड़ी

सामग्री - चावल 1/2 कप, मूंग दाल (छिलका या बिना छिलके की) 1/2 कप, घी या तेल- 2 टेबल स्पून, हींग 1 चुटकी,जीरा 1/2 टीस्पून, कटा हुआ अदरक 1 टी स्पून, हरी मिर्च 1 (वैकल्पिक), हल्दी पाउडर 1/4 टीस्पून, नमक स्वादानुसार, पानी 4 कप

सब्जियां (छोटी कटी हुई) - गाजर 1, बीन्स 5-6,मटर 1/4 कप, आलू 1, टमाटर 1,फूलगोभी 1/4 कप

बनाने की विधि - चावल और दाल को अच्छी तरह धोकर 15-20 मिनट के लिए भिगो दें। सब्जियां धोकर छोटे टुकड़ों में काट लें। कुकर में घी या तेल गर्म करें, उसमें हींग, जीरा, अदरक, और हरी मिर्च डालें। जब जीरा चटकने लगे, तब कटे टमाटर और हल्दी डालें। टमाटर नरम हो जाए तो बाकी कटी सब्जियां डालें और 2 मिनट भूनें। अब भीगी हुई दाल और चावल डालें, नमक डालें और 4 कप पानी मिलाएं। कुकर का ढक्कन लगाएं और 2-3 सीटी आने तक पकाएँ।

प्रेशर उतरने के बाद खोलें, खिचड़ी को हल्के से चला लें। ऊपर से थोड़ा घी और हरा धनिया डालकर परोसें।

परोसने के सुझाव - दही या बूंदी रायता के साथ पापड़ और अचार के साथ

सेहत

पैदल चलने से दूर होगी पुरानी बीमारी

वॉक करना यानी पैदल चलना एक शानदार एरोबिक एक्सरसाइज है और आपके मेटाबॉलिज्म को सही रखने के लिए एक अच्छा तरीका है। इसके बावजूद, कई लोग आजकल पैदल चलने से बचते हैं। थोड़ी दूरी तक भी जाना हो, तो समय बचाने के लिए टू या फोर व्हीलर का इस्तेमाल कर लेते हैं, जो गलत है। जर्नल मेडिसिन इन साइंस एंड स्पोर्ट्स एंड एक्सरसाइज के अनुसार, पैदल चलने से पुरानी से पुरानी बीमारी को दूर करने में मदद मिलती है।

● **30 मिनट तक चलें पैदल-** पैदल तो हर कोई चल सकता है, लेकिन इसका भी एक विशेष तरीका होता है, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। अगर आप बहुत ज्यादा फिजिकली एक्टिव नहीं रहते, तो आपको पैदल चलने की शुरूआत 10 मिनट से करनी चाहिए। हर दिन अपनी वॉकिंग एक-एक मिनट बढ़ाते जाएं। इस तरह का अभ्यास आपको तब तक करना है, जब तक आपके पैदल चलने का समय 30 मिनट न हो जाए। जब 110 दिन बाद आपकी वॉकिंग कैपेसिटी बढ़ चुकी हो, उस वक्त आप आधे घंटे से ज्यादा मॉर्निंग वॉक कर रहे होंगे। एक व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए कम से कम इतने मिनट तो पैदल चलना ही चाहिए।

● **वजन घटाए-** पैदल चलना कैलोरी जलाने और वजन कम करने का एक प्रभावी तरीका है। रोजाना 30 मिनट तक पैदल चलने से वजन घटाने में बहुत मदद मिलती है, साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक बना रहता है।

● **दिल को रखे दुरुस्त -** पैदल चलने से दिल के स्वास्थ्य में सुधार होता है। कई अध्ययनों से यह भी पता चला है कि पैदल चलने से हृदय संबंधी घटनाओं का जोखिम 31 प्रतिशत तक कम हो सकता है। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के अनुसार हर वयस्क को सप्ताह में 5 दिन कम से कम 30 मिनट तक तेज चलना चाहिए।

● **ब्लड प्रेशर को कंट्रोल -** बेशक आपको पैदल चलने में आलस आता हो, लेकिन अपने बीपी को रेगुलेट करने के लिए आपको हर दिन वॉक करनी ही चाहिए, यह वॉक आप मार्केट जाते समय कर सकते हैं या ऑफिस में भी कर सकते है। हर दिन 10,000 कदम चलने से रक्तचाप में गिरावट आती है और स्टेमिना भी बढ़ता है।

● **जोड़ों को मजबूत बनाए-** नियमित रूप से पैदल चलने या वॉक करने से जोड़ों के बीच चिकनाई में सुधार होता है। साथ ही यह मांसपेशियों को मजबूत करने का काम करता है। जिन लोगों को अक्सर घुटनों में दर्द रहता है, उनके लिए पैदल चलना बहुत फायदेमंद है। इससे पुरानी से पुरानी ऑस्टियो आर्थराइटिस की समस्या बहुत जल्दी खत्म हो जाती है।

● **फेफड़ों की क्षमता बढ़ाए -** रोजाना किसी न किसी रूप में पैदल चलने से आपके फेफड़ों की क्षमता बढ़ सकती है। जब आप चलते हैं तो आप अधिक मात्रा में ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं। अधिक मात्रा में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड का यह आदान-प्रदान आपके फेफड़ों के लिए बेहद फायदेमंद साबित होता है।

● **स्ट्रेस दूर करे-** हर दिन वॉक करने से खराब मूड भी अच्छा हो जाता है। कई अध्ययनों में यह साबित हुआ है कि फिजिकल एक्टिविटी अवसाद को रोकने में मदद कर सकती है। इतना ही नहीं, पैदल चलने से परिसंचरण में सुधार होता है, जिससे तनाव को कम करने में मदद मिलती है।

● **ध्यान रखें-** यदि अभी-अभी पैदल चलना शुरू कर रहे हैं, तो शुरूआत में आप बहुत ज्यादा लंबी दूरी तक न चलें। हर दिन 10 मिनट तक चलने की कोशिश करें।

NIKHIL
ADHESIVES LTD.
Mahacol®
SINCE 1971
FURNITURE KI
WATERPROOF
SECURITY
JALVEER
WATERPROOF ADHESIVES
Mahacol
WATERPROOF ADHESIVES
German Technology
Waterproof
Quick dry
Long-Lasting
TRUSTED
BY PROFESSIONALS
SINCE 1971
GERMAN
TECHNOLOGY
JALVEER
WATERPROOF ADHESIVE
www.nikhiladhesives.com

विश्वकर्मा समिति करेगी मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

मुंबई। पढ़ेगा तभी तो बढ़ेगा इंडिया के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए विश्वकर्मा समिति, मुंबई की ओर से समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सर्व शिक्षा अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत समिति ने इस वर्ष 10वीं और 12वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। यह सम्मान समारोह 6 जुलाई 2026 को मंदिर स्थापना दिवस के अवसर पर सांताक्रुज (पूर्व) कालीना स्थित संस्था के प्रांगण में आयोजित किया जाएगा।

विश्वकर्मा समिति की संपर्क टीम के सदस्य परविंद विश्वकर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि समिति के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा, चेयरमैन सुनील राणा व महामंत्री एडवोकेट जे.पी. शर्मा के मार्गदर्शन में यह अभियान निरंतर आगे बढ़ रहा है। समिति का उद्देश्य समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करना है।

उन्होंने बताया कि विगत वर्ष से समिति द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की शुरूआत की गई थी, जिसका सकारात्मक प्रभाव समाज में देखने को मिल रहा है। मुंबई सहित ठाणे, पालघर, वसई, विरार, मीरा-भायंदर और पनवेल क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थियों को इस अभियान से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। समिति का मानना है कि आज के विद्यार्थी ही देश के भविष्य हैं और यही बच्चे आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आर्किटेक्ट, शिक्षक, वकील, आईपीएस अधिकारी, सेना के जवान और पायलट बनकर देश की सेवा करेंगे। समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि शिक्षा को बढ़ावा देना ही समाज के विकास का सबसे बड़ा माध्यम है। इसी सोच के साथ समिति लगातार शिक्षा जागरूकता अभियान चला रही है। सर्व शिक्षा अभियान को सफल बनाने में समिति के सभी पदाधिकारियों एवं कमेटी सदस्यों का विशेष योगदान है। समिति का प्रयास है कि यह अभियान आने वाले वर्षों में भी लगातार जारी रहे और अधिक से अधिक विद्यार्थियों को लाभ मिले।

समिति द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में केवल विद्यार्थियों को ही नहीं, बल्कि उनके माता-पिता को भी सम्मानित किया जाएगा। समिति का मानना है कि बच्चों की सफलता के पीछे अभिभावकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब मंच पर विद्यार्थियों के साथ उनके माता-पिता का सम्मान होता है, तो इससे अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलती है और वे बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं।

जानकारी के अनुसार पिछले वर्ष समिति द्वारा लगभग पांच लाख रुपये की नकद शिक्षा प्रोत्साहन राशि विद्यार्थियों के अभिभावकों को प्रदान की गई थी। इस वर्ष इस राशि को बढ़ाकर साढ़े सात लाख रुपये कर दिया गया है। पिछले वर्ष कक्षा 10वीं के मेधावी विद्यार्थियों को 15-15 हजार रुपये तथा कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को 20-20 हजार रुपये की नकद राशि प्रदान की गई थी।

इस वर्ष समिति ने निर्णय लिया है कि कक्षा 10वीं के 25 विद्यार्थियों के अभिभावकों को 15 हजार रुपये तथा कक्षा 12वीं के 15 विद्यार्थियों के अभिभावकों को 20 हजार रुपये की शिक्षा प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। इसके अलावा अन्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया जाएगा।

समिति के पदाधिकारियों ने समाज के लोगों से अपील करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को प्रोत्साहित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। समाज तभी प्रगति करेगा जब नई पीढ़ी शिक्षित और जागरूक बनेगी। विश्वकर्मा समिति इसी उद्देश्य के साथ समाज सेवा के कार्यों में निरंतर सक्रिय है।

कारीगर जातियों को भी मिले उनका अधिकार

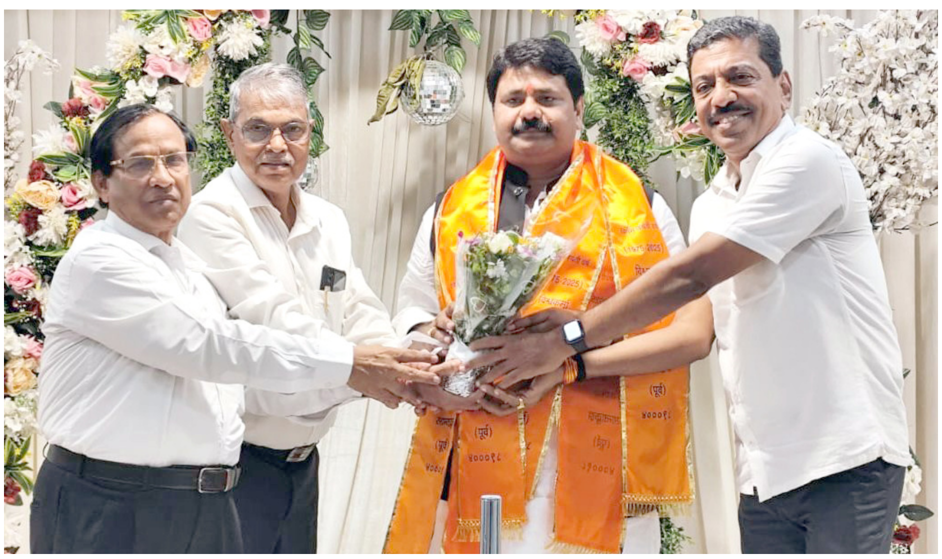

मुंबई। लोकजन सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि योगी सरकार में माइक्रो जातियों पर अत्याचार बढ़ा है। विश्वकर्मा समिति मुंबई संस्था की ओर से सांताक्रुज (पूर्व) कालीना स्थित विश्वकर्मा हॉल में आयोजित समारोह में उन्होंने कहा कि यूपी में छोटी जातियों को उनके अधिकार से वंचित रखा गया।

ओबीसी में बड़ी आबादी वाली जातियां यादव, कुर्मी, राजभर, निषाद लगातार सत्ता में रही हैं इसलिए उनको सत्ता का लाभ भी मिल रहा है जिससे ओबीसी की बड़ी जातियों का विकास भी हो रहा है जबकि छोटी जातियों को अभी तक की सरकारों ने वंचित कर रखा है। उन्होंने कहा कि 2027 के विधानसभा चुनाव में किसी की भी सरकार बने लेकिन उसमें ओबीसी की छोटी जातियों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। लोकजन सोशलिस्ट पार्टी यूपी की 403 सीटों पर चुनाव लड़ेगी जिसके उम्मीदवार शोषित समाज ही होंगे।

विश्वकर्मा ने कहा कि जनता की बीच योगी सरकार के खिलाफ असंतोष बढ़ रहा है, 2027 विधानसभा के बाद इस सरकार की विदाई तय है। उन्होंने कहा कि देश में तमाम जातियां अपने हक के लिए गोलबंद हो रही हैं, उनकी आवाज को सरकारें भी सुन रही हैं लेकिन विश्वकर्मा समाज अब भी बिखरा पड़ा हुआ है। लीडरशिप के अभाव में इस समाज को नेतृत्व नहीं मिला। इस समाज से जो भी विधायक और मंत्री बने वे अपनी पार्टी के दायरे में सिमटकर रह गए। उन्होंने विश्वकर्मा समाज के लोगों से आह्वाहन किया कि राजनीति में भागीदारी के लिए बढ़चढ़कर हिंसा लें। सत्ता विकास की कुंजी है, इसलिए विभिन्न राजनैतिक दलों में अपनी सहभागिता बढ़ाइए। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा, चेयरमैन सुनील राना, महामंत्री जे. पी. शर्मा, सचिन विश्वकर्मा, राजकुमार विश्वकर्मा, गणेश विश्वकर्मा, महेंद्र विश्वकर्मा आदि ने भी विचार रखे।

फिर लौटा 2000 साल पुराना खपली गेहूं

खपली गेहूं को केवल एक पुराना अनाज कहना गलत होगा इसका पोषण मूल्य इसे सामान्य गेहूं की तुलना में बेहद खास बनाता है। हड़प्पा कालीन अनाज को अब फ्यूचर का आटा बताया जा रहा है। भारतीय भोजन परम्परा में गहराई से रचे-बसे प्राचीन खपती गेहूं की चर्चा आज एक बार फिर तेज हो गई है।

आधुनिक गेहूं के आने से पहले दक्कन और दक्षिण भारत के इलाकों में उगाया जाने वाला यह अनाज करीब 2000 साल पुराना हड़प्पा कालीन धरोहर है। महाराष्ट्र और कर्नाटक में इसके सख्त और मोटे बाहरी आवरण के कारण इसे खपली नाम मिला, दुनिया भर में इसे एमर, इटली में फारो मेडियो और दक्षिण भारत में संबा कहा जाता है। 1960-70 के दशक की हरित क्रांति के बाद अधिक पैदावार वाली आधुनिक किस्मों के आने से यह मुख्यधारा से लगभग गायब हो गया था। लेकिन अब स्वास्थ्य और विरासत की खोज में यह फिर लौट रहा है।

मधुमेह और मोटापा नियंत्रण कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स और उच्च फाइबर के कारण यह वजन घटाने और शुगर नियंत्रित करने वाले लोगों के लिए बेहतरीन विकल्प है। इसकी केवल 3 चपातियां हमारी दैनिक फाइबर आवश्यकता का लगभग 34% हिस्सा पूरा कर देती हैं। यह पेट को लंबे समय तक भरा रखता है जिससे बेवजह भूख नहीं लगती है। देश के शीर्ष शेफ का मानना है कि हाइब्रिड आधुनिक गेहूं की पैदावार की होड़ में अपनी मूल सुगंध खो दी है। खपली गेहूं में एक सोंधा, मेवों जैसा गहरा स्वाद मिलता है, जो रोटियों, कुलचे और विशेष ब्रेड को लाजवाब स्वाद देता है। आज के दौर में लोग खाने के साथ उसकी संस्कृति से भी जुड़ना चाहते हैं। जब रेस्तरां के मेन्यू पर लिखा होता है कि यह 2000 साल पुरानी विरासत से बनी रोटी है, तो भोजन का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्य कई गुना बढ़ जाता है।

रसोई में उपयोग और भविष्य की राह

कम और कमजोर ग्लूटेन होने के कारण खपली का आटा आधुनिक आटे की तरह लचीला

नहीं होता। इसे गूंधते समय पानी धीरे-धीरे डालना पड़ता है। हल्के हाथों से गूंथने के बाद इसे 15 मिनट का आराम देने से बेलना बेहद आसान हो जाता है। इससे बनी रोटियां हल्की क्रीम के बजाय गहरे लाल सुनहरे रंग की और घनी बनती है जो खाने में बेहद सोंधी लगती है। कम पैदावार और सीमित खेती के कारण आज यह बाजार में 3 से 5 गुना महंगा (150 से 250 प्रति किलो मिल रहा है। 140 करोड़ की आबादी वाले देश के लिए यह पूरी तरह मुख्य भोजन का विकल्प भले न बने, लेकिन प्रीमियम हेल्थ फूड और हेरिटेज ग्रेन के रूप में इसने अपनी मजबूत वापसी दर्ज करा ली है।

HARRISON
HARRISON®
Glorious 75+ Years
कारपेन्टर
सुविधा
स्कीम
कारपेन्टर
सुविधा स्कीम
में भाग लें और पाएं
ढेरों इनाम!
रजिस्टर करने के लिए
QR कोड
स्कैन करें
सुविधा APP
बंपर
मुनाफा
बनो हरीसन का
Mr. आनंद
रहो हमेशा आनंद में
LG
9:02
PM
BOSCH
विजेता
विजेता
विजेता
विजेता
विजेता
विजेता
विजेता
टोल फ्री नंबर : 1800-572-5795 | ★★★★★ भरोसा सुरक्षा का ★★★★★
www.harrisonlocks.com | email : info@harrisonlocks.com
नॉट:- ऊपर दर्शायी गई फोटो सिर्फ उपहार को दर्शाने हेतु है मिलने वाला उपहार इनमे से भिन्न हो सकता है : रंग मॉडल इत्यादि।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
95992 81937

~ घर घर हरीसन
अब हर घर में हरीसन ~

HARRISON | हरीसन

हरीसन प्रोडक्ट पॉइंट अर्जित करने का तरीका किया और भी आसान

मात्र क्यू आर कोड को स्कैन करने पर पाएं उपहार

हरीसन का नया QR स्कैनिंग फीचर – कारपेंटर्स के लिए आसान इनाम!

देश के भरोसेमंद ब्रांड हरीसन ने कारपेंटर्स के लिए QR स्कैनिंग फीचर लॉन्च किया है, जिससे उपहार जीतना अब और भी आसान हो गया है।

कारपेंटर्स को हरीसन प्रोडक्ट की पैकिंग में दिए गए QR कोड को स्कैन करना है, और उनके रजिस्टर्ड प्रोफाइल पर पॉइंट्स अपने आप जुड़ जाएंगे। अब प्रोडक्ट की कट्टिंग संभालने की जरूरत नहीं, बस स्कैन करें और इनाम पाएं।

यह पहल कारपेंटर्स की सहूलियत और प्रोत्साहन के लिए की गई है। हरीसन हमेशा अपने कारीगरों के साथ खड़ा है!

उपहार जीतने की प्रक्रिया

- स्टेप 1: मोबाइल मे हरीसन सुविधा एप्लीकेशन डाउनलोड करे, और अपनी ID बनाकर लॉगिन करे।
- स्टेप 2: प्रोडक्ट पैक के अंदर लगे QR CODE को सुविधा एप्लीकेशन मे स्कैन करे और MRP के बराबर पॉइंट इकट्ठा करे।
- स्टेप 3: दिये गये 7 उपहार के आधार पर अपने पॉइंट REDEEM करे, और उपहार जीते

Suvidha
iSoftCare Technology

प्ले स्टोर पर (HARRISON SUVIDHA APP) सर्च कर के हरीसन लोगो एप्लीकेशन अपने फ़ोन मे इनस्टॉल करे।

स्कैन करने की प्रक्रिया

हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन

विजेता

हरीसन ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ द्वारा आयोजित "हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन" का भव्य आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों दक्ष कारपेंटर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम कारीगरों के समर्पण, मेहनत और उत्कृष्टता को सम्मानित करने हेतु आयोजित किया गया था। आयोजन में हरीसन के वरिष्ठ अधिकारियों ने प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, उपहार व विशेष सम्मान प्रदान किए। मंच पर डिज़ाइन innovation, आधुनिक उपकरणों के उपयोग और Quality work पर संवाद हुआ। साथ ही, कंपनी ने अपने आगामी उत्पादों की झलक भी प्रस्तुत की। यह महासम्मेलन हरीसन की उस भावना को दर्शाता है जिसमें वह अपने कारपेंटर्स को केवल भागीदार नहीं, बल्कि अपने परिवार का अहम हिस्सा मानता है। यह आयोजन हर वर्ष नई प्रेरणा लेकर आता है।

विजेता

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No. 1800-572-5795

Advt

राजस्थान से राज्यसभा में अनुभव, सादगी और समर्पण की नई तिकड़ी

राजस्थान की राजनीति में राज्यसभा चुनाव प्रायः राजनीतिक गणित, रणनीति और शक्ति प्रदर्शन के लिए चर्चा में रहते हैं, लेकिन इस बार का चुनाव एक अलग ही संदेश देकर गया। प्रदेश से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नीरज डांगी तथा भारतीय जनता पार्टी के डॉ. सतीश पूनिया और डॉ. अलका सिंह गुर्जर का निर्विरोध निर्वाचन केवल एक चुनावी परिणाम नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व, राजनीतिक विश्वसनीयता और संगठनात्मक स्वीकार्यता की भी सार्वजनिक स्वीकृति माना जा रहा है। 11 जून को निर्वाचन अधिकारी से विजय प्रमाण पत्र प्राप्त करने के साथ ही तीनों नेताओं ने राज्यसभा की नई पारी का औपचारिक आगाज किया। खास बात यह रही कि तीनों उम्मीदवारों के सामने कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। राजनीतिक जानकार इसे उनकी व्यक्तिगत छवि, दलों के विश्वास और राजनीतिक स्वीकार्यता का प्रमाण मान रहे हैं।

नीरज डांगी: सौम्यता और संवाद की राजनीति का चेहरा

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नीरज डांगी का लगातार दूसरी बार राज्यसभा के लिए निर्वाचित होना उनके राजनीतिक कद और विश्वसनीयता का परिचायक है। राजस्थान की राजनीति में डांगी को एक ऐसे नेता के रूप में देखा जाता है, जिनकी पहचान शोर-शराबे वाली राजनीति से नहीं, बल्कि सौम्य व्यवहार, संतुलित सोच और संवाद की संस्कृति से बनी है। राज्यसभा में अपने पहले कार्यकाल के दौरान उन्होंने राजस्थान से जुड़े अनेक विषयों को प्रभावी ढंग से उठाया। चाहे किसानों के मुद्दे हों, युवाओं के रोजगार की चुनौतियां हों या प्रदेश के विकास से जुड़े विषय, डांगी ने अपनी बात तथ्यों और गंभीरता के साथ रखने की शैली विकसित की। यही कारण है कि कांग्रेस नेतृत्व ने उन पर दोबारा विश्वास जताया। उनकी राजनीतिक यात्रा यह संदेश देती है कि राजनीति में विनम्रता, संयम और निरंतर संवाद भी उतने ही प्रभावी हथियार हो सकते हैं जितने कि आक्रामक भाषण। यही विशेषता उन्हें समकालीन राजनीति में अलग पहचान प्रदान करती है।

लोकतंत्र का सकारात्मक संदेश

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि तीनों नेताओं का निर्विरोध निर्वाचन लोकतंत्र के उस सकारात्मक पक्ष को सामने लाता है, जहां व्यक्तिगत विश्वसनीयता, सार्वजनिक जीवन की स्वच्छ छवि और संगठन का विश्वास निर्णायक भूमिका निभाते हैं। राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार के अनुसार, राजस्थान से निर्विरोध चुने गए तीनों सांसद अपनी सादगी, स्वच्छ छवि और जनस्वीकार्यता के कारण विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच सम्मान प्राप्त करते हैं। वहीं राजस्थान की राजनीति के जानकार अरविंद चोटिया का कहना है कि तीन सीटों पर केवल तीन उम्मीदवार ही होने के कारण चुनाव निर्विरोध होना स्वाभाविक था। उन्होंने हल्के-फुल्के राजनीतिक व्यंग्य में कहा कि चौथा उम्मीदवार नहीं होने से विधायकों को मजा नहीं आया। वैसे, राजस्थान को राज्यसभा में इस बार जो प्रतिनिधित्व मिला है, उसमें अनुभव का संतुलन, सौम्यता की गरिमा और संगठनात्मक समर्पण की ऊर्जा तीनों का सुंदर संगम दिखाई देता है। नीरज डांगी की विनम्र राजनीतिक शैली, डॉ. सतीश पूनिया का व्यापक अनुभव और डॉ. अलका सिंह गुर्जर का संगठन के प्रति समर्पण आने वाले वर्षों में न केवल राज्यसभा की बहसों को समृद्ध करेगा, बल्कि राजस्थान की आवाज को राष्ट्रीय मंच पर और अधिक प्रभावी स्वर भी प्रदान करेगा।

डॉ. सतीश पूनिया: संगठन से संसद तक का लंबा अनुभव

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ. सतीश पूनिया का राज्यसभा पहुंचना अनुभव, संघर्ष और संगठनात्मक नेतृत्व की एक स्वाभाविक परिणति माना जा रहा है। छात्र राजनीति से लेकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और विधानसभा में विपक्ष के नेता जैसे महत्वपूर्ण दायित्व निभा चुके डॉ. पूनिया लंबे समय से राजस्थान की राजनीति के प्रमुख चेहरों में शामिल रहे हैं। उन्होंने संगठन और जनसंपर्क दोनों क्षेत्रों में समान दक्षता दिखाई है। ग्रामीण राजस्थान की नब्ज को समझने वाले नेताओं में उनकी गिनती होती है। प्रशासनिक समझ, संगठनात्मक अनुभव और राजनीतिक परिपक्वता उन्हें राज्यसभा में राजस्थान की आवाज को और अधिक प्रभावी ढंग से रखने में सक्षम बनाएगी। डॉ. पूनिया का निर्विरोध निर्वाचन इस बात का भी संकेत है कि पार्टी नेतृत्व उनके अनुभव और राजनीतिक दृष्टि को राष्ट्रीय स्तर पर उपयोगी मानता है। राज्यसभा में उनकी मौजूदगी राजस्थान के मुद्दों को नीति निर्माण की बहसों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

डॉ. अलका गुर्जर: समर्पण, सादगी और संगठन की शक्ति

राज्यसभा के लिए पहली बार निर्वाचित हुई डॉ. अलका सिंह गुर्जर की राजनीतिक यात्रा संगठन के प्रति समर्पण और निरंतर सक्रियता की कहानी है। लंबे समय तक संगठन में विभिन्न जिम्मेदारियां निभाते हुए उन्होंने कार्यकर्ता आधारित राजनीति का उदाहरण प्रस्तुत किया है। भाजपा संगठन में उनकी पहचान एक ऐसी नेता की रही है, जिन्होंने बिना किसी विशेष प्रचार या व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के संगठन के लिए लगातार काम किया। महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सरोकारों और संगठन विस्तार के क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भूमिका को हमेशा सराहा गया है। राज्यसभा के लिए उनका चयन यह दर्शाता है कि भारतीय जनता पार्टी अपने समर्पित और मेहनती कार्यकर्ताओं को उचित अवसर देने की परंपरा को आगे बढ़ा रही है। उनकी नियुक्ति महिला नेतृत्व को राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक मजबूती देने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

महाराष्ट्र में भी चलेगा बुलडोजर चलेगा : फडणवीस

मुंबई। उत्तर प्रदेश की बुलडोजर संस्कृति की तर्ज पर महाराष्ट्र में की जा रही बुलडोजर कार्रवाई को सही ठहराते हुए राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि उनका प्रदेश कानून से चलता है और जो कानून का पालन नहीं करेगा उसके खिलाफ बुलडोजर की कार्रवाई होगी, यह आगे भी जारी रहेगी।

फडणवीस एनडी टीवी मराठी मंच की ओर से महाराष्ट्र की नारी शक्ति को लेकर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। महिला शक्ति और महिला स्वास्थ्य जैसे विषय को लेकर हुए इस कार्यक्रम में अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली कई महिला हस्तियों ने अपने विचार रखे।

फडणवीस ने कहा कि वो किसी राज्य विशेष की बात नहीं करते लेकिन महाराष्ट्र में जहां कानून का राज चलता है वहां अगर कोई गलत करता है, कानून से परे जा कर काम करता है तो उसके खिलाफ बुलडोजर की कार्रवाई की गई है। लेकिन हमने नियमों के तहत नोटिस देकर बुलडोजर चलाया है। किसी को टारगेट करके नहीं । जो गलत करेगा उस पर कार्रवाई होगी और बुलडोजर आगे भी चलता रहेगा।

महिला आरक्षण की बात करते हुए उन्होंने कहा कि जब तक आरक्षण नहीं देंगे तब तक महिलाओं की सहभागिता नहीं बढ़ेगी। शिक्षा और नौकरी की तरह ही राजनीति में भी महिलाओं की संख्या बढ़ाने के लिये मोदी सरकार ने नारी शक्ति विधेयक लाने की कोशिश की थी लेकिन विपक्ष ने इसे सफल नहीं होने दिया।

उन्होंने कहा कि नारी शक्ति विधेयक के लिये पीएम नरेंद्र मोदी जी ने लॉजिकल सलूशन दिया था लेकिन विपक्ष को दरअसल इसे पारित करना ही नहीं था। लेकिन पश्चिम बंगाल चुनावों में भारी पराजय के बाद देश के अनेक पार्टियों को ये समझ में आ गया है कि महिलाओं को दरकिनार कर वो राजनीति नहीं कर सकते। कई अलग अलग राजनीतिक दल अब इसे समर्थन देने के लिये तैयार हो रहे हैं। ये पारित होगा और 2029 में ही महिला आरक्षण आकर रहेगा। उम्मीद है कि महाराष्ट्र की विपक्षी पार्टियों को सुबुद्धि आयेगी और वो भी इसके समर्थन में वोट देंगे।

मुख्यमंत्री ने सरकार की लाडली बहन योजना से 80 लाख महिलाओं को अलग कर देने के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि यह देश के किसी राज्य में चलने वाली सबसे बड़ी योजना है। हमने किसी को भी निकाला नहीं है। लाभार्थी होने की कुछ शर्तें थी। हमने केवाईसी की शुरूआत की लेकिन जिन्होंने केवाईसी नहीं की तो संदेह हुआ। पता चला कि इसमें 14 हजार पुरूष हैं, 5 लाख सरकारी कर्मचारी हैं, 10 लाख लोग आयकर भरते हैं और 5 लाख के पास अपने वाहन हैं। जो अयोग्य और गैर केवाईसी के है उन्हें रोका है। 25 लाख महिलाओं की केवाईसी गलत थी तो हमने उन्हें ठीक करवा दिया। सरकार फिर से केवाईसी के लिये तैयार है लेकिन अयोग्य लोगों को कोई पैसा नहीं मिलेगा।

छापेमारी में 90 टन मुर्गे का अपशिष्ट और सात वाहन जब्त

मछली को चारे में खिलाया जा रहा था मुर्गे का अपशिष्ट

हैदराबाद। पुलिस और ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम की एक साथ की गई कार्रवाई में एक बड़े अवैध रैकेट का पदार्फाश हुआ है, जो मछली पालन के लिए मुर्गे के सड़े-गले अपशिष्ट का इस्तेमाल कर रहा था। यह कार्रवाई हैदराबाद फूड एडल्टरेशन सर्विलांस टीम और पशु चिकित्सा विभाग की मदद से की गई। टीम ने अम्बरपेट, कुलसुमपुरा, अत्तापुर और राजेंद्र नगर जैसे कई इलाकों में छापेमारी कर लगभग 90 टन मुर्गे का अपशिष्ट और सात वाहन जब्त किए हैं। शुरूआती जांच में पता चला है कि यह नेटवर्क लंबे समय से सक्रिय था और शहर की पोल्ट्री दुकानों से कचरा इकट्ठा कर इसे अवैध तरीके से दूसरे राज्यों तक पहुंचाया जा रहा था। जांच अधिकारियों के अनुसार यह मुर्गे का अपशिष्ट बिना किसी लाइसेंस और सुरक्षा मानकों के एकत्र किया जाता था। इसे आंध्र प्रदेश के वेस्ट गोदावरी और तेलंगाना के नलगोंडा जैसे इलाकों में मछली पालन के लिए सस्ते चारे के रूप में बेचा जा रहा था। यह तरीका इसलिए अपनाया जा रहा था ताकि मछली उत्पादन की लागत कम की जा सके और ज्यादा मुनाफा कमाया जा सके, लेकिन यह पूरी तरह से अवैध और स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। विशेषज्ञों का कहना है कि सड़ा हुआ पोल्ट्री वेस्ट बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी और कई तरह के हानिकारक कीटाणुओं से भरा हो सकता है। जब इसे मछलियों को खिलाया जाता है, तो यह पानी को प्रदूषित करता है और धीरे धीरे ये हानिकारक तत्व खाद्य श्रृंखला के जरिए इंसानों तक पहुंच सकते हैं। इससे फूड प्वाइजनिंग, पेट संबंधी बीमारियां और अन्य गंभीर संक्रमण फैलने का खतरा बढ़ जाता है।

फायदों के साथ जोड़ो
EURO 7000 Wood Adhesive
OFFER STARTS FROM 8TH JUNE 2026
140 पॉइंट्स
में अब डबल रिवॉर्ड्स
Euro 7000 Digital App में 140 पॉइंट्स
रिडीम करके पाएं दोगुने फायदे
नॉइज़ ईयरबड्स
वर्थ ₹2,999
+
स्विस मिलिट्री ब्लूटूथ स्पीकर
वर्थ ₹4,990
आज ही "Euro 7000 Digital"
ऐप डाउनलोड करें
Google Play
App Store
TERMS & CONDITIONS
• इस Offer का लाभ उठाने के लिए "EURO7000 DIGITAL" Application Download करें और Points Scan करें।
• यह ऑफर Limited Time के लिए है।
• कंपनी इस स्कीम को कभी भी बदलने या बंद करने का अधिकार रखती है।
www.euroadhesives.com

वरुण ने राखी सावंत को बताया पॉप कल्चर आइकॉन

वरुण धवन ने सोशल मीडिया और पॉप कल्चर से जुड़े दिलचस्प विषयों पर खुलकर बात की। कॉमेडियन तन्मय भट्ट के शो में पहुंचे एक्टर ने राखी सावंत की जमकर तारीफ की और उन्हें भारतीय पॉप कल्चर का एक आइकॉन बताया। जिसे फैंस काफी पसंद कर रहे हैं।

शो के दौरान एक इंटरनेट मीम दिखाया गया, जिसमें एक म्यूजिक कॉन्सर्ट में लगी एक इंस्टॉलेशन को राखी सावंत जैसा बताया गया था। इस पर रिस्पॉन्स देते हुए वरुण धवन ने कहा कि राखी सावंत अब केवल एक सेलिब्रिटी नहीं हैं, बल्कि पॉप कल्चर का हिस्सा बन चुकी हैं। उन्होंने कहा कि राखी एक आइकॉन हैं और कई लोगों ने उनकी शैली और व्यक्तित्व की नकल करने की कोशिश की है, लेकिन उनकी जगह कोई नहीं ले सकता। वरुण के मुताबिक राखी सावंत जैसी शख्सियत केवल एक ही हो सकती है। बातचीत के दौरान वरुण धवन ने अपनी मुस्कान को लेकर सोशल मीडिया पर बने मजाक और मीम्स का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि उन्हें कभी उम्मीद नहीं थी कि उनकी मुस्कान ट्रोलिंग का विषय बन जाएगी। एक्टर ने कहा कि उन्हें लगता था कि लोग उनकी आवाज, हाइट या एक्टिंग को लेकर मजाक बना सकते हैं। उन्होंने हंसते हुए कहा कि करियर की शुरूआत में उनकी आवाज काफी अलग थी और उनके भाई भी इस बात को लेकर उन्हें चिढ़ाते थे।

मिजाजी सईया गाने ने मचाया धमाल

आकांक्षा पुरी ने भोजपुरी इंडस्ट्री में खुद की कमाल की पहचान बना ली है, अक्सर वो भोजपुरी गानों के वीडियो में नजर आती है। हाल ही में उनका नया गाना रिलीज हुआ है, जिसको चंद घंटो में लाखों व्यूज हासिल हो चुके हैं। कमाल की बात है कि इस गाने में थाई एक्टर की एंट्री हुई है, जिनका नाम पैट्रिक है, लोग उन्हें निपत चारोएनफोल के नाम से भी जानते हैं। गाने का टाइटल मिजाजी सईंया है, जिसे शिल्पी राज ने गाया है।

आकांक्षा पुरी के नए गाने ने रिलीज के बाद सोशल मीडिया पर धूम मचाई है। गाने का टाइटल मिजाजी सईंया है, जो कि गजब की धूम मचा रहा है। इस गाने को टी सीरीज हमार भोजपुरी चैनल पर रिलीज किया है। इस गाने की खूब तारीफ की है। गाने में थाई एक्टर का होना भी काफी कमाल का है, जिसके साथ आकांक्षा की जोड़ी बनी है। थाईलैंड के जाने माने एक्टर पैट्रिक उर्फ निपत चारोएनफोल लोगों के बीच अपनी एक वीडियो के चलते आए थे। दरअसल, उन्होंने एक शॉपिंग मार्ट में भोजपुरी गाने पर डांस किया था। इस वीडियो के सामने आने के बाद से ये तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था।

इस गाने के बोल अजीत मंडल ने लिखे हैं और इसका शानदार म्यूजिक विनय विनायक ने तैयार किया है। आकांक्षा पुरी ने भोजपुरी में काफी काम किया है, लेकिन खेसारी लाल यादव के साथ उनकी जोड़ी को लोग काफी पसंद करते हैं। दोनों ने साथ में कई गानों में काम किया और सोशल मीडिया पर भी पोस्ट में दोनों अक्सर साथ दिखते हैं।

गर्मी में मोनालिसा को सता रही समंदर की याद

देश में कई शहरों में चिलचिलाती गर्मी पड़ रही है। इस बीच भोजपुरी की ग्लैमरस हसीना मोनालिसा ने अपने इंस्टाग्राम पर कुछ बेहद खास तस्वीर शेयर की हैं। जिनमें वो समंदर किनारे मौज मस्ती करती हुईं नजर आ रही हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट के कैप्शन में लिखा कि मुझे फिर से ले चलो। दरअसल भयंकर गर्मी के बीच मोनालिसा ने जो तस्वीरें शेयर की हैं, वो करीब 5 साल पुरानी हैं। ये तस्वीरें मोनालिसा ने अपने सोशल हैंडल पर पहली बार अगस्त 2021 में शेयर की थी। अब मोनालिसा को गर्मी के बीच फिर से समुद्र की याद सता रही है। मोनालिसा इन तस्वीरों में बेहद बोल्ड अंदाज में नजर आ रही हैं। ये तस्वीरें मालदीव की बताई जा रही हैं। 2021 में मोनालिसा अपने पति विक्रांत सिंह राजपूत के साथ मालदीव छुट्टियों पर गई थी, उस वक्त उन्होंने खूब सारी तस्वीरें शेयर की थी। मालदीव में बीच पर मस्ती करने के अलावा मोनालिसा ने वहां मौजूद स्विमिंग पूल में भी डुबकी लगाई थी। बिकीनी पहने बोल्ड अंदाज में मोनालिसा ने स्विमिंग पूल की अपनी कई तस्वीरें साझा की थी।

50 पार कर चुकी हसीनाएं आज भी ढाती हैं कहर

90 के दशक में अपनी खूबसूरती और दमदार अदाकारी से लाखों दिलों पर राज करने वाली ये एक्ट्रेसेस आज भी फैंस की फेवरेट बनी हुई हैं। 50 की उम्र पार करने के बावजूद उनके ग्लैमरस अंदाज और फिटनेस का कोई जवाब नहीं है। माधुरी, ऐश्वर्या, शिल्पा समेत ये हसीनाएं खूबसूरती के मामले में यंग एक्ट्रेसेस के फेल कर देती हैं।

90 के दशक की सबसे पॉपुलर एक्ट्रेसेस में से एक माधुरी दीक्षित आज भी अपनी खूबसूरती और ग्रेस से लोगों का दिल जीत लेती हैं। 50 की उम्र पार करने के बावजूद उनका चार्म और मुस्कान फैंस को दीवाना बना देती है। एक्ट्रेस 59 की उम्र में भी बला की खूबसूरत दिखती है। इन दिनों एक्ट्रेस फिल्म मां बहन में नजर आ रही हैं।

एक्स मिस वर्ल्ड ऐश्वर्या राय बच्चन की खूबसूरती के चर्चे आज भी दुनिया भर में होते हैं। बढ़ती उम्र का असर उन पर बिल्कुल नहीं दिखता और उनका एलिगेंट अंदाज फैंस को खूब पसंद आता है। हाल ही में कान्स 2026 में एक्ट्रेस ने शिरकत की थी, जहां उन्होंने सारी लाइमलाइट लूट ली थी।

शिल्पा शेट्टी फिटनेस की दुनिया का बड़ा नाम है। 51 साल की उम्र में भी उनकी फिटनेस, ग्लोइंग स्किन और स्टाइलिश अंदाज कई यंग एक्ट्रेसेस को टक्कर देता है।

90 के दशक में अपनी अदाकारी और स्टाइल से पहचान बनाने वाली करिश्मा कपूर आज भी बेहद ग्लैमरस नजर आती हैं। उनकी फिटनेस और खूबसूरती देखकर उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है। प्रीति जिंटा अपनी क्यूट स्माइल और फिटनेस के लिए जानी जाती हैं।

किसके प्रपोज से बेहद खुश हैं सुहाना

बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान की लाडली पॉपुलर स्टार किड्स में शामिल हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर भी एक्टिव रहती हैं। हाल ही में उन्होंने इंस्टा स्टोरी पर एक कपल की तस्वीर शेयर की है, जो उनके कजिन ब्रदर और उनकी गर्लफ्रेंड की है। सुहाना ने अपने ममेरे भाई अर्जुन छिब्बा और उनकी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड मानवी गौर की ड्रीमी तस्वीर शेयर की है, जिसमें अर्जुन अपनी गर्लफ्रेंड को प्रपोज करते नजर आ रहे हैं। अपने भाई और भाभी की खुशी को सुहाना ने भी सेलिब्रेट किया है और उन्हें बधाई दी है। सुहाना ने अर्जुन और मानवी की फोटो शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा है कि आप दोनों को बहुत-बहुत बधाई। मेरी तरफ से दोनों को बहुत सारा प्यार। अर्जुन गौरी खान के भाई विक्रांत छिब्बा के बेटे हैं। सुहाना के वर्कफ्रंट की बात करें तो उन्होंने फिल्म द आर्चीज से अपने फिल्मी करियर की शुरूआत की थी। जोया अख्तर के डायरेक्शन में बनी ये फिल्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई थी। फिल्म में सुहाना के साथ वेदांग रैना, खुशी कपूर और अगस्त्या नंदा जैसे स्टार किड्स नजर आए थे। वहीं अब एक्ट्रेस जल्द ही फिल्म किंग में नजर आने वाली हैं, ये फिल्म इसी साल 2026 में रिलीज होने वाली है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक-गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा द्वारा 306, दिघे नगर को आप हाउसिंग सोसायटी, फितवाला रोड, एलफिन्स्टन (वेस्ट), मुंबई-40013 से प्रकाशित एवं एस आर पब्लिकेशन, मोहन अर्जुन कम्पाउंड, गाला नम्बर-8, 9, 10, घर्टनपाढा, वैशाली नगर लास्ट बस स्टॉप, नियर भारत गैस गोडाउन, दहिसर (ईस्ट), मुंबई- 400068 से मुद्रित। संपादक - गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा* RNI NO. MAHHIN/2005/16460 मो. 09320566633. (सभी विवादों का निपटारा न्यायक्षेत्र केवल मुंबई न्यायालय के अधीन होगा. *पी. आर. बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

मोदी सरकार के 12 साल

नये भारत की नयी शिक्षा व्यवस्था : विकसित राष्ट्र का मजबूत आधार

करीब दो सदी पुरानी बात है जब ब्रिटिश इतिहासकार और प्रशासक थॉमस बैबिंगटन मैकाले ने एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखी जिसे एक औपनिवेशिक साम्राज्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया था। मकसद सीधा था, अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों का एक ऐसा समूह बनाना जो ब्रिटिश शासन को चलाने में मदद कर सके। यानी सीधे शब्दों में बाबूगिरी। इस शिक्षा प्रणाली में स्टैंडर्ड बनाये रखने, परीक्षा और रटने पर जोर दिया गया, जिससे क्लर्क और ब्यूरोक्रेट की कई पीढ़ियां तैयार हुईं जिन्होंने उपनिवेशों में कामकाज को सुचारू रूप से बनाये रखा। काल बदला और 2020 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) लायी।

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020: खास बातें

- फ्लेक्सिबल, मल्टी डिसिप्लिनरी लर्निंग के साथ 34 सालों में सबसे बड़ा शैक्षणिक सुधार।
- 2014 और 2024 के बीच विश्वविद्यालय 723 से बढ़कर 1,213 हुए।
- उच्च शिक्षण संस्थान लगभग 59,000 हो गए हैं, जिससे पूरे भारत में इनकी पहुँच बढ़ रही है।
- 23 आईआईटी, 22 आईआईएम और 20 एम्स अब भारत के नॉलेज इकोसिस्टम को मजबूत कर रहे हैं।
- फ्लेक्सिबल लर्निंग पाथवे के लिए 4.6 करोड़ एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स आईडी जारी किए गए।
- 3.5 करोड़ नई सीटों के साथ 2035 तक 50% हायर एजुकेशन एनरोलमेंट का लक्ष्य।
- अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ) के जरिए रिसर्च को बढ़ावा।
- विदेशी कैंपस और जॉइंट-डिग्री प्रोग्राम्स के जरिए एजुकेशन का ग्लोबलाइजेशन।
- हायर एजुकेशन में महिलाओं और ग्रामीण छात्रों की ज्यादा भागीदारी।
- एजुकेशन रिफॉर्म्स को विकसित भारत@2047 के साथ जोड़ा गया है, जिससे एक कौशलपूर्ण इनोवेशन करने वाली पीढ़ी तैयार हो रही है।

जिसका मकसद उस मैकाले की उस प्रणाली को पूरी तरह से बदल कर भारत को 21वीं सदी की जरूरतों के लिए तैयार करना। अगर मैकाले का एजुकेशन मॉडल उस अंग्रेज साम्राज्य की सेवा करने के लिए था, तो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिये युवा नेतृत्व को मजबूत करने की नींव बनी।

यह अंतर बहुत अलग है। जहाँ औपनिवेशिक दौर का फ्रेमवर्क एक जैसा होने और रट्टू तोता बनने पर फोकस करता था, वहीं एनईपी तार्किक सोच, रचनात्मकता, इनोवेशन, फ्लेक्सिबिलिटी और बहु-विषयक शिक्षा पर जोर देती है। इसे 34 सालों में भारत की शिक्षा प्रणाली में पहला बड़ा बदलाव और आजाद भारत में किए गए सबसे बड़े सुधारों में से एक माना जाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके पीछे की सोच को परिभाषित करते हुए कहा था कि नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020, 21 वीं सदी के भारत के युवाओं के लिए जरूरी शिक्षा और कौशल पर फोकस करती है। हमें अपने छात्रों को 21वीं सदी में उनका कौशल विकसित करने के लिये तैयार करना है। ये स्किल्स क्या होंगी ? ये क्रिटिकल थिंकिंग, क्रिएटिविटी, कोलेबोरेशन, क्यूरियोसिटी और कम्युनिकेशन होंगी।

इस बदलाव का असर भारत की उच्च शिक्षा में तेजी से दिख रहा है। एक दशक पहले, लाखों छात्र, खासकर छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों से आने वाले छात्रों के लिए अच्छी गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक पहुंच बड़ी चुनौती बनी हुई थी। सीमित शिक्षण संस्थान, कम सीटें और भौगोलिक अंतर अक्सर मौकों और उम्मीदों को कम कर देते थे।

आज, विस्तार के पैमाने को नजरअंदाज करना मुश्किल है। भारत में विश्वविद्यालयों की संख्या 2014 की 723 से बढ़कर 2024 में 1,213 हो गई है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान 51,500 से बढ़कर लगभग 59,000 हो गए हैं। यह बढ़ोतरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने, नई सेंट्रल यूनिवर्सिटी और राष्ट्रीय महत्व के इंस्टीट्यूशन बनाने, और पीएम-उषा और राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान जैसे फ्लैगशिप प्रोग्राम की वजह से हुई है।

यह बढ़ोतरी सिर्फ़ संख्यात्मक नहीं है। आज भारत में 23 इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी), 22 इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) और 20 ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) हैं। अबू धाबी और जांजीबार में आईआईटी कैंपस खुलने से भारत की अपनी सीमाओं से बाहर बढ़ती शैक्षिक मौजूदगी और एक ग्लोबल नॉलेज पार्टनर के तौर पर उभरने का संकेत मिलता है।

स्पष्ट है कि इस नेशनल एजुकेशनल पॉलिसी का उद्देश्य सख्त एकेडमिक स्ट्रक्चर से दूर जाना है। छात्रों से अब यह उम्मीद नहीं की जाती कि वे साइंस, कॉमर्स या ह्यूमैनिटीज के परंपरागत पाठ्यक्रमों तक ही सीमित रहें। एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए मल्टीपल एंट्री और एग्जिट का विकल्प, बहु-विषयक पाठ्यक्रम और क्रेडिट ट्रांसफर, छात्रों को उनकी पसंद और करियर के हिसाब से अपने भविष्य की राह चुनने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स इस पॉलिसी के तहत सबसे बड़े सुधारों में से एक के तौर पर उभरा है। यह 2,600 से ज्यादा इंस्टीट्यूशन को कवर करते हुए और 4.6 करोड़ से ज्यादा छात्रों को आईडी जारी कर इंस्टीट्यूशन में एकेडमिक क्रेडिट जमा करने, स्टोर करने और ट्रांसफर करने की सुविधा देता है। 150 से ज्यादा विश्वविद्यालय पहले ही एनईपी फ्रेमवर्क के साथ फ्लेक्सिबल एडमिशन और एग्जिट व्यवस्था को अपना चुके हैं।

इस नीति का एक और बड़ा मकसद हायर एजुकेशन में सहभागिता को बेहतर बनाना है। एनईपी ने 2035 तक उच्च शिक्षा में 50% का ग्रॉस एनरोलमेंट रेश्यो हासिल करने का टारगेट रखा है। इसे हासिल करने के लिए, इसमें यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में 3.5 करोड़ नई सीटें जोड़ने की योजना है।

हाल के आंकड़े बताते हैं कि यह तरक्की पहले से ही हो रही है। हायर एजुकेशन में स्टूडेंट एनरोलमेंट 2021-22 में 4.33 करोड़ से बढ़कर 2022-23 में 4.46 करोड़ हो चुका है, जो अलग-अलग इलाकों, और सामाजिक-आर्थिक समूहों में बढ़ती पहुंच को दिखाता है।

रिसर्च और इनोवेशन सुधारों का एक और आधार हैं। अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की

संख्या के हिसाब से नेशनल एजुकेशन पॉलिसी

- 723 → 1,213 यूनिवर्सिटी (2014-2024)
- 51,500 → 59,000 हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन
- 23 आईआईटी। 22 आईआईएम। 20 एम्स
- 4.6 करोड़ ABC आईडी जारी
- 2035 तक 50% जीईआर का लक्ष्य
- 3.5 करोड़ नई हायर एजुकेशन सीटों की योजना

स्थापना का मकसद भारत के रिसर्च इकोसिस्टम को मजबूत करना, एकेडेमिया और इंडस्ट्री के बीच सहयोग को बढ़ावा देना और अलग-अलग विषयों में साइंटिफिक जांच को बढ़ावा देना है। एमईआरआईटीई जैसे कार्यक्रमों का मकसद तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता और काम की क्वालिटी को बेहतर बनाना है, साथ ही इनोवेशन और एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देना है।

यह पॉलिसी भारतीय हायर एजुकेशन को इंटरनेशनलाइज करने की भी कोशिश करती है। नए नियम विदेशी यूनिवर्सिटीज के साथ ट्विनिंग, जॉइंट और डुअल-डिग्री प्रोग्राम की इजाजत देते हैं, जबकि कई इंटरनेशनल इंस्टिट्यूशन भारत में कैंपस खोलने के मौके तलाश रहे हैं। इसका बड़ा मकसद भारत को वैश्विक शिक्षा के केंद्र के तौर पर बनाना और छात्रों के इस भ्रम को कम करना कि सिर्फ विदेशों में ही अच्छी शिक्षा मिलती है।

यूनिवर्सिटी और क्लासरूम के अलावा, ये सुधार भारत के बड़े विकास के लक्ष्यों से भी जुड़े हैं। एजुकेशन, स्किल, इनोवेशन और एम्प्लॉयबिलिटी को तेजी से आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बिल्डिंग ब्लॉक के तौर पर देखा जा रहा है। वोकेशनल एजुकेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल लर्निंग, स्टार्टअप और इंडस्ट्री-एकेडेमिया कोलेबोरेशन को बढ़ावा देने वाली ऐसी पहल तकनीक से चलने वाली दुनिया में काम की बदलती प्रकृति को दिखाते हैं।

इन सुधारों का महत्व विकसित भारत@2047 के संदर्भ में और भी बढ़ जाता है, जो आजादी की सौवीं सालगिरह तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने का नेशनल विजन है। पॉलिसी बनाने वाले मानते हैं कि सिर्फ़ डेमोग्राफिक एडवांटेज से खुशहाली की गारंटी नहीं मिलेगी। अगर भारत को मैन्युफैक्चरिंग, टेक्नोलॉजी, हेल्थकेयर, इनोवेशन और सर्विसेज में विश्व गुरु बनना है, तो भारत की युवा आबादी को वर्ल्ड-क्लास स्किल्स, रिसर्च कैपेबिलिटी और एंटरप्रेन्योरल एबिलिटी से लैस होना होगा।

इसलिए एनईपी सिर्फ़ एक शैक्षिक सुधार से कहीं ज्यादा है; यह एक राष्ट्र निर्माण है। पहुंच बढ़ाकर, मल्टीडिसीप्लिनरी लर्निंग को बढ़ावा देकर, रिसर्च को मजबूत करके, इनोवेशन पर जोर देकर और लाइफलोंग लर्निंग का कल्चर बनाकर, यह उस मानवीय पूंजी को बनाने की कोशिश करती है जो भारत विकास यात्रा को उसके अगले पड़ाव तक बढ़ाएगा।

चुनौतियाँ बेशक बनी हुई हैं। सभी राज्यों में एक जैसा इम्प्लीमेंटेशन पक्का करना, फैकल्टी क्वालिटी में सुधार करना, रिसर्च फंडिंग को मजबूत करना और क्षेत्रीय अंतर को कम करना, इसके लिए लगातार कोशिश और निवेश की जरूरत होगी। फिर भी बदलाव की दिशा साफ है।

अगर मैकाले की शिक्षा प्रणाली एक कॉलोनियल एडमिनिस्ट्रेशन की जरूरतों को पूरा करती थी, तो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी एक ऐसी पीढ़ी बनाने की कोशिश करती है जो भारत का भविष्य बना सके। क्लर्क बनाने से लेकर क्रिएटर्स, साइंटिस्ट्स, इनोवेटर्स और एंटरप्रेन्योर को तैयार करने का सफर लंबा हो सकता है, लेकिन भारत उस बदलाव के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध लगता है। जैसे-जैसे देश अपने विकसित भारत@2047 लक्ष्यों की ओर बढ़ रहा है, एनईपी की सफलता यह तय कर सकती है कि भारत सिर्फ़ ग्लोबल नॉलेज इकॉनमी में हिस्सा लेगा या इसे लीड करने में मदद करेगा।

- प्रोफेसर मनोज कुमार तिवारी,
डायरेक्टर, आईआईएम मुंबई

फर्नीचर कंपनियों का भारतीय लकड़ी पर बढ़ा भरोसा

एक साल में 25% तक महंगी हुई विदेशी लकड़ी

मुंबई। भारत का फर्नीचर उद्योग अब बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहा है। मलेशिया, वियतनाम, यूरोप और अमेरिका से आने वाली लकड़ी पर निर्भर रहने वाली कंपनियां अब भारतीय लकड़ी पर भरोसा कर रही हैं। मीडिया खबरों के मुताबिक इसकी सबसे बड़ी वजह बढ़ती आयात लागत, शिपमेंट में देरी और वैश्विक सप्लाई चेन में लगातार बढ़ता जोखिम है। ऑनलाइन फर्नीचर कंपनियों का कहना है कि पिछले दो वर्षों में विदेशी लकड़ी की लागत में तेजी से बढ़ोतरी हुई। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आने से कंटेनर और समुद्री शिपमेंट महंगे हो गए। उद्योग के अनुमान के मुताबिक, शिपमेंट लागत में करीब 30 फीसदी तक वृद्धि दर्ज की गई है। इसका असर सीधे फर्नीचर निर्माण लागत पर पड़ रहा है।

फर्नीचर कंपनियों के अनुसार आयातित लकड़ी की कीमतें पिछले एक साल में करीब 25 फीसदी तक बढ़ चुकी हैं। इससे कंपनियों का मार्जिन दबाव में आया और ग्राहकों के लिए फर्नीचर महंगा होने लगा। पहले कंपनियां प्रीमियम कैटेगरी के लिए ओक, वॉलनट और इंजीनियर्ड विदेशी लकड़ी पर अधिक निर्भर थीं। मलेशिया, वियतनाम, यूरोप और अमेरिका से 15 से 20 फीसदी तक इस श्रेणी में आयात किया जाता था, लेकिन अब वे भारतीय विकल्पों को प्राथमिकता दे रही हैं। भारतीय बाजार में शीशम, सागौन, रबरवुड, आम और इंजीनियर्ड वुड की मांग तेजी से बढ़ रही है।

एक प्रमुख फर्नीचर कंपनी ने स्थानीय लकड़ी का उपयोग 40 फीसदी से बढ़ाकर 60 फीसदी तक कर दिया है। कंपनियों का कहना है कि इससे लागत कम होने के साथ डिलीवरी समय भी घटा है। पहले विदेशी सप्लायर पर निर्भरता के कारण ऑर्डर पूरे होने में कई सप्ताह लग जाते थे। विशेषज्ञों के मुताबिक, स्थानीय सप्लाई चेन मजबूत होने से इन्वेंट्री मैनेजमेंट में भी सुधार हुआ है। कंपनियां अब कम स्टॉक रखकर भी तेज डिलीवरी देने में सक्षम हो रही हैं। वैश्विक लॉजिस्टिक्स संकट के दौरान फर्नीचर कंपनियों को सबसे ज्यादा परेशानी शिपमेंट देरी से हुई। उद्योग के अनुमान के अनुसार, विदेशी लकड़ी पर निर्भरता की वजह से डिलीवरी में देरी का जोखिम करीब 50 फीसदी तक बढ़ गया था। कई कंपनियों को कंटेनर की कमी, बंदरगाहों पर भीड़ और लंबी कस्टम प्रक्रिया जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

एक कंपनी के अनुसार, वैश्विक सप्लाई चेन प्रभावित होने से 30 से 35 फीसदी उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। कुछ फर्नीचर उत्पाद 7 से 8 फीसदी तक महंगे हो गए। पांच से सात फीसदी फर्नीचर उत्पाद के दाम 15 फीसदी तक बढ़े। विशेषज्ञों का कहना है कि फर्नीचर उत्पाद बनाने में इस्तेमाल होने वाले केमिकल के दाम भी 30 से 160 फीसदी तक बढ़े हैं। इससे कंपनियों के मार्जिन पर दबाव पड़ा। पेपरफ्राई, वेकफिट और वुडन स्ट्रीट जैसी कंपनियां अब केवल ऑनलाइन बिक्री पर निर्भर नहीं रहना चाहतीं। ये कंपनियां ऑफलाइन स्टोर नेटवर्क बढ़ाने के साथ घरेलू सप्लाई चेन को मजबूत कर रही हैं। उद्योग विशेषज्ञों का कहना है कि भारत का फर्नीचर बाजार अभी भी काफी हद तक असंगठित है। ग्राहक कीमत को लेकर बेहद संवेदनशील हैं, इसलिए कंपनियों को लागत नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना पड़ रहा है। मेड इन इंडिया टैग ग्राहकों के बीच भरोसा भी बढ़ा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर फर्नीचर कंपनियां बड़े पैमाने पर भारतीय लकड़ी का उपयोग बढ़ाती हैं तो इसका फायदा घरेलू लकड़ी उद्योग, छोटी कंपनियों और कारीगरों को मिलेगा। आयात बिल घटने से देश के व्यापार संतुलन पर भी सकारात्मक असर पड़ सकता है। आने वाले वर्षों में भारतीय फर्नीचर उद्योग में लोकल मैन्युफैक्चरिंग, तेज डिलीवरी और कम लागत वाला मॉडल सबसे बडा प्रतिस्पर्धी हथियार बन सकता है।

पॉपुलर पेड़ की लकड़ी कुर्क, थाने में जमा

बरेली। फतेहगंज पश्चिमी ब्लॉक क्षेत्र के एक गांव में एक महीने से चल रहे पॉपुलर के पेड़ के विवाद में प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। एसडीएम निधि शुक्ला के निर्देश पर नायब तहसीलदार और थाना प्रभारी निरीक्षक प्रवीन कुमार की अगुवाई में विवादित पॉपुलर की लकड़ी थाने में जमा कर दी गई। यह विवाद गांव मीरापुर के मजरे खिलचीपुर में एक कृषि भूमि से जुड़ा है। इस जमीन पर शाही के पप्पू प्रधान और हरियाणा के राजीव राणा दोनों अपना दावा कर रहे हैं। कृषि भूमि में लगभग 650 पॉपुलर के पेड़ हैं। करीब एक माह पहले पप्पू प्रधान ने कुछ विवादित पॉपुलर के पेड़ काट दिए थे। इस पर दूसरे पक्ष राजीव राणा ने कड़ी आपत्ति जताई। मामला बढ़ने पर पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर पेड़ कटान रुकवा दिया था। यह मामला एसडीएम कोर्ट पहुंचा, जहां एसडीएम निधि शुक्ला ने पुलिस की रिपोर्ट के आधार पर कटी हुई लकड़ी को कुर्क करने का आदेश जारी किया। इस आदेश के अनुपालन में नायब तहसीलदार अरविंद कुमार और थाना प्रभारी निरीक्षक प्रवीन कुमार के नेतृत्व में राजस्व और पुलिस टीम मौके पर पहुंची। टीम ने ट्रैक्टर-ट्रॉली की मदद से दलदल भरे रास्ते से पूरी कटी हुई लकड़ी भरकर थाने में जमा करा दी। नायब तहसीलदार अरविंद कुमार और थाना प्रभारी निरीक्षक प्रवीन कुमार ने बताया कि जांच रिपोर्ट और सक्षम अधिकारी के आदेश के बाद ही लकड़ी का निस्तारण किया जाएगा और किसी पक्ष को सौंपी जाएगी।

पॉपुलर एक तेजी से बढ़ने वाला पतझड़ी वृक्ष है, जो लगभग 25 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। इसके हृदयाकार पत्ते पीपल के पत्तों से मिलते-जुलते हैं, इसलिए इसे पहाड़ी पीपल के नाम से भी जाना जाता है। कृषि-वानिकी के क्षेत्र में पॉपुलर का विशेष महत्व है। किसान इसे मुख्य फसलों के साथ या खेतों की मेड़ों पर लगाकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। इसके पत्तों का उपयोग पशु चारे के रूप में किया जाता है, जबकि इसकी लकड़ी विभिन्न उपयोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। तेजी से बढ़ने और आर्थिक लाभ प्रदान करने के कारण पॉपुलर किसानों के लिए एक उपयोगी और लाभकारी वृक्ष है।

बीकेसी में होगा होम डेकोर एक्सपो

मुंबई। होम डेकोर और फर्निशिंग उत्पाद क्षेत्र का व्यापार मेला होम डेकोर एक्सपो 13 से 15 जून 2026 के दौरान मुंबई के बीकेसी स्थित जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया जाएगा। इस प्रदर्शनी में अग्रणी होम डेकोर और फर्निशिंग ब्रांड कंपनियों के 50 बड़े स्टॉल लगाए जाएंगे। इस बी2बी (बिजनेस-टू-बिजनेस) मेले में लगभग 13,000 व्यापारिक आगंतुकों के आने की संभावना है। अभिनेत्री अमृता राव होम डेकोर उद्योग की ब्रांड एंबेसडर हैं। एसोसिएशन ऑफ होम टेक्सटाइल के अध्यक्ष चिराग दिनेश मेहता ने बताया कि वर्तमान में होम डेकोर और फर्निशिंग उत्पादों की मांग काफी अच्छी है।

बरसात में जब लकड़ी के दरवाजे बंद न हो

बरसात के दिनों में वातावरण में नमी बढ़ जाती है। ऐसे में नमी पकड़ने की वजह से लकड़ी के दरवाजे, उनके साथ लगी चौखटें या फिर खिड़कियां भी सीलन की वजह से फूलने लगती हैं। मानसून के दिनों में लकड़ी के दरवाजे फूलने पर उन्हें सही करने के लिए किचन में रखीं कुछ चीजों की जरूरत होगी। इसके लिए सरसों का तेल और नींबू ले लें, फिर एक बाउल में सरसों का तेल और नींबू का रस बराबर मात्रा में लें। इन्हें दरवाजे, खिड़की या चौखट के उन हिस्सों पर लगाएं जहां आपको सीलन या फूलने की दिक्कत लग रही हो। इन्हें कुछ देर खुला रहने दें। ऐसा करने से सीलन दूर होने में मदद मिलेगी। साथ ही अटक रहे दरवाजे फिर से सही तरीके से बंद होने लगेंगे।

कच्चे माल के दाम बढ़ने से फर्नीचर खरीदना हुआ महंगा

मुंबई। मध्य पूर्व में चल रहे युद्ध का असर अब आम जनजीवन पर भी पड़ता हुआ साफ दिखाई देने लगा है। पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में लगातार हो रही वृद्धि से कई प्रकार के उद्योग प्रभावित हुए हैं। युद्ध का सबसे बड़ा असर फर्नीचर उद्योग पर देखा जा रहा है, जहां लगातार कच्चे माल की कीमतों में हो रही भारी बढ़ोतरी ने उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए मुश्किल पैदा कर दी है। कच्चे माल की लगातार कीमतों में हो रहे इजाफे के चलते अब फाइनल प्रोडक्ट भी बाजार में महंगा हो गया है।

फर्नीचर उद्योग में उपयोग होने वाले प्रमुख उत्पादों के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। ऐसे में फर्नीचर उद्योग से जुड़े उद्यमियों के लिए बड़ी चिंता उत्पन्न हो गई है। उद्यमी कच्चा माल अधिक मात्रा में नहीं खरीद रहे हैं क्योंकि कच्चे माल के दामों को लेकर लगातार बाजार में अनिश्चितता बनी हुई है और कच्चा माल काफी महंगा हो गया है। उद्यमियों को डर है कि कच्चा माल अगर भारी मात्रा में स्टॉक कर लेते हैं और कच्चे माल के दाम आने वाले दिनों में गिर जाते हैं तो भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। वहीं दूसरी तरफ कच्चे माल के दाम काफी तेजी के साथ बढ़ रही हैं, ऐसे में छोटे उद्योगों के लिए बड़े पैमाने पर कच्चे माल को स्टॉक करना मुश्किल हो गया है।

मुख्य तौर पर फर्नीचर को बनाने में लकड़ी का इस्तेमाल होता है लेकिन कई ऐसे उत्पाद हैं, जो पेट्रोलियम से तैयार होते हैं और फर्नीचर निर्माण में इस्तेमाल होते हैं। दरअसल वुड एडहेसिव, रेजिन पॉलिश, प्लास्टिक फिटिंग, फार्म और लैमिनेट आदि कई उत्पाद पेट्रोकेमिकल से तैयार होते हैं। सभी उत्पादों का उत्पादन कच्चे तेल से सीधे तौर पर जुड़ा है। उदाहरण के लिए प्लाईवुड और एमडीएफ बोर्ड बनाने में इस्तेमाल होने वाला रेजिन फिनोल और फोरमलडायहड सीधे तेल आधारित रसायनों से तैयार होता है।

इसी तरह फर्नीचर में तैयार होने वाले मैट्रेस, कुशन और प्लास्टिक एसेसरीज भी पेट्रोलियम उत्पादों से तैयार होती हैं। इसके अलावा पैकेजिंग मैटेरियल भी पेट्रोलियम उत्पादों से तैयार होता है। जब कच्चा माल महंगा होता है तो इसका सीधा असर उत्पादन लागत पर पड़ता है। कुल मिलाकर फर्नीचर उद्योग में क्रूड ऑयल आधारित उत्पादों का इस्तेमाल व्यापक है और यही वजह है कि क्रूड ऑयल के दामों में बढ़ोतरी का असर फर्नीचर उद्योग पर पड़ रहा है। फर्नीचर उद्योग से जुड़े व्यापारियों का मानना है कि कच्चे माल की कीमतों में इजाफा होने के कारण फर्नीचर की कीमतें 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ गई है। कच्चे माल की कीमतें अनियंत्रित हो चुकी हैं। मार्केट में पहले से ही कंपटीशन काफी अधिक है, ऐसे में हमें उसका भी ख्याल रखना है। कच्चे माल के आज कुछ रेट है, कल कुछ और रेट होंगे। हर दिन रेट तेजी के साथ बढ़ रहे हैं। फोम और गद्दी के रेट 15 से 20 प्रतिशत बढ़े हैं। फर्नीचर के पोलिश में इस्तेमाल होने वाले थिनर के दाम तकरीबन 25 प्रतिशत बढ़ चुके हैं। प्लाईवुड और एमडीएफ बोर्ड के दामों में भी 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

ममता ने कहा – रुद्राक्ष और भगवा कपड़े से चल रहा धर्म का खेल

मुंबई। किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर रह चुकी अभिनेत्री ममता कुलकर्णी ने कहा कि रुद्राक्ष और भगवा कपड़े की आड़ में धर्म के ठेकेदार अपनी रोटियां सेंक रहे हैं। श्रीकांत वर्मा ट्रस्ट की ओर से आयोजित श्रीकांत वर्मा स्मरांजलि में उन्होंने कहा कि धर्म का मतलब सत्य है। सत्य को योगी ही जान सकता है, लेकिन कुछ लोग सत्य का भेष बनाकर कर असत्य कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि महामंडलेश्वर बनने के बाद भी मुझे ऐसा कुछ बड़ा नहीं लगा।

बस महामंडलेश्वर बनकर फूल माला लेते रहो, भक्त पैर छुएंगे उनको आशीर्वाद देते रहो। मेरे सामने जगतगुरु के पास भी कोई ज्ञान नहीं है। मुझे ज्यादा नाटक नहीं जमा इसलिए निकल गई। जबकि मेरे पास 25 वर्षों की आध्यात्मिक पूंजी है। मेरे गुरु गगनगिरी महाराज जल समाधि लेते थे उनमें इतनी शक्ति थी, उनके दिए गए ज्ञान को बांटना अब मेरा उद्देश्य है।

ममता कुलकर्णी ने कहा कि इस समय उन्हें राजनीति में होना चाहिए था लेकिन देर हो चुकी है। उन्होंने कहा कि किसी राजनीतिक दल से प्रस्ताव आता है तो उस पर विचार करेंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्य से प्रभावित ममता ने कहा कि दुनिया में भारत का नाम ऊंचा हुआ है। मैं 2007 में इंडिया से बाहर निकली थी, लगभग पूरी दुनिया घूमी। आज भारतीय पासपोर्ट को सम्मान की नजर से देखा जाता है।

श्री ब्रह्मचैतन्य यमाई ममता नंद गिरि उर्फ ममता कुलकर्णी ने श्रीकांत वर्मा ट्रस्ट की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज युवा पीढ़ी अपने माता पिता के सम्मान को भूलती जा रही है जबकि पूर्व सांसद व साहित्यकार श्रीकांत वर्मा को 40 वर्षों से लगातार याद किया जा रहा है। माता पिता हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं जिसे हमें गंवाना नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि वस्तुओं के बीच अपने जीवन को बर्बाद मत करिये, जीवन के सही सदुपयोग से समाज मजबूत बनेगा। समारोह में पूर्व सांसद डॉ. भालचंद्र मुणगेकर, उलका नायर, राजन भोसले व राघवेंद्र शुक्ला ने भी विचार रखे।

हीट वेव से बचाने में कारगर हैं फ्रूट्स हर्ब्स

दक्षिणी राज्यों में मानसून ने दस्तक दे चुकी है लेकिन उत्तर से लेकर मध्य और पश्चिम भारत में अभी भी हीट वेव्स चल रही हैं। इस वजह से लोग डिहाइड्रेशन, चक्कर आने, थकान और लू से पीड़ित हो रहे हैं। ऐसे में गर्मी से राहत दिलाने, हीट वेव से बचाने के लिए कुछ फ्रूट्स और हर्ब्स का सेवन बहुत कारगर हो सकता है। बेल का शर्बत, सौंफ का पानी, पुदीना, धनिया और खस से बने पेय शरीर को ठंडक पहुंचाने के लिए बहुत कारगर हैं।

आयुर्वेद के अनुसार ग्रीष्म ऋतु में शरीर में द्रवों की कमी होने लगती है और पित्त का प्रभाव बढ़ जाता है। इसलिए ऐसे खाद्य पदार्थों और जड़ी बूटियों का सेवन लाभदायक होता है, जो शरीर को शीतलता प्रदान करें और हमारी ऊर्जा को भी बरकरार रखें। यही कारण है कि इन दिनों बेल, सौंफ, पुदीना, खस, आंवला, धनिया और गुलकंद जैसी चीजों का उपयोग करना फायदेमंद होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इनकी सबसे बड़ी ताकत है, इनमें मौजूद प्राकृतिक तत्व, जो शरीर को हाइड्रेट रखने, हमारे शरीर के पाचन तंत्र को संतुलित करने और गर्मी से होने वाली बेचैनी को कम करने में सहायक होते हैं।

पुदीना, बेल, आंवलाः पुदीना शरीर को ताजगी देता है और गर्मी के कारण होने वाली थकान तथा भूख की कमी होने वाली समस्याओं को कम करने में मदद करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सदियों से गर्मी और लू से बचने के लिए बेल का शरबत पिया जाता रहा है। फाइबर और खनिज से भरपूर बेल में शरीर को गर्मी से लड़ने के लिए अनेक तत्व होते हैं, जो हमारे पाचन तंत्र से लेकर शरीर की ऊर्जा तक को महफूज रखते हैं। गर्मी से लड़ने में कारगर औषधीय फल आंवला भी है। बढ़ती गर्मी और बदलते मौसम के बीच संक्रमणों से बचाव के लिए भी यह बेहद उपयोगी है। ये फल और हर्ब्स, हीट वेव का इलाज नहीं करते केवल उससे बचाव में सहायक होते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति को तेज बुखार, बेहोशी, अत्यधिक कमजोरी या हीट स्ट्रोक के लक्षण दिखाई दें तो उसे केवल घरेलू उपायों पर निर्भर रखना खतरनाक हो सकता है। ऐसी स्थिति में तुरंत चिकित्सा सहायता लेना जरूरी है।

– रेखा देशराज

दरवाजे के पीछे सामान टांगना पड़ सकता है भारी

अक्सर हम जगह बंधाने के चक्कर में घर के दरवाजों के पीछे कपड़े, थैले या अन्य फालतू सामान टांग देते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार, यह आदत न केवल नकारात्मकता फैलाती है बल्कि कंगाली का कारण भी बन सकती है। दरवाजे के पीछे का हिस्सा साफ और खाली होना चाहिए, अन्यथा यह परिवार की प्रगति में बाधक बनता है।

कपड़े और तौलिया – दरवाजे के पीछे कपड़े टांगने से मानसिक तनाव और चिड़चिड़ापन बढ़ता है। विशेषकर गीले कपड़े या तौलिया टांगने से राहु ग्रह दोष उत्पन्न होता है, जो सेहत बिगाड़ सकता है।

दवाइयों का थैला – भूलकर भी गेट के पीछे दवाइयां न लटकाएं। वास्तु के अनुसार, ऐसा करने से घर में बीमारियां पैर पसारने लगती हैं और धन का बड़ा हिस्सा इलाज में खर्च होने लगता है।

पुराने कैलेंडर और जूते – पुराने कैलेंडर समय की गति को रोकते हैं, जिससे करियर में रुकावट आती है। वहीं, दरवाजे के पीछे जूते-चप्पल रखना अशांति और दरिद्रता को आमंत्रण देता है।

गर्मी में बढ़ रही खांसी जुकाम की समस्या

चिलचिलाती गर्मी के मौसम में शरीर को ठंडा रखने के लिए हम अक्सर एसी, कूलर और पंखे का सहारा लेते हैं। इस मौसम में दिनभर धूप और तेज गर्मी में रहने के बाद जैसे ही हम घर लौटते हैं, तुरंत ठंडे एसी वाले कमरे में बैठ जाते हैं। तापमान में अचानक आने वाला यह बदलाव शरीर को सर्द-गर्म का शिकार बना देता है। इसके अलावा, हीटवेव (लू) के कारण हवा सूखी और धूल भरी हो जाती है, जिससे खांसी, जुकाम और गले में खराश की समस्या तेजी से बढ़ती है।

धूल और प्रदूषण के कारण इस मौसम में एलर्जी और सांस संबंधी दिक्कत बढ़ जाती है। साथ ही शरीर में पानी की कमी होने से गला और नाक की अंदरूनी परत सूख जाती है, जिससे सूखी खांसी और छींक आने लगती हैं।

गर्मी के मौसम में होने वाले इस इंफेक्शन से अस्थमा, साइनस और एलर्जी के मरीजों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है। लंबे समय तक गर्म हवाओं और धूल के संपर्क में रहने से निम्नलिखित लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

– लगातार सूखी खांसी और बार-बार छींक आना।

– गले में तेज खराश, जलन या नाक बंद होना।

– आंखों से पानी आना और तेज सिरदर्द होना।

– कुछ गंभीर मामलों में थकान, सीने में जकड़न या सांस लेते समय सीटी जैसी आवाज आना।

इस समस्या का सबसे मुख्य इलाज शरीर को डिहाइड्रेशन से बचाना है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से गला और सांस की नलियां नम रहती हैं, जिससे जलन कम होती है। बाहर तेज धूप और धूल में निकलने से बचें। डॉक्टरों के अनुसार, गंभीर स्थिति में एंटीहिस्टामिन दवाएं, नेजल स्प्रे या इनहेलर की जरूरत पड़ सकती है। यदि लक्षण हल्के हैं, तो आप घर पर भाप ले सकते हैं, गुनगुना पानी पी सकते हैं, नमक के पानी से गरारे कर सकते हैं या शहद का सेवन कर सकते हैं। अस्थमा के मरीजों को अपनी नियमित दवाएं बिना चूके लेते रहना चाहिए।

दवा से आराम न मिलने पर क्या करें?

अगर घरेलू नुस्खों और प्राथमिक दवाओं के बाद भी खांसी छींक ठीक नहीं हो रही है, तो डॉक्टर कुछ जरूरी टेस्ट कराने की सलाह देते हैं।

CUMI SINCE 1954 70 YEARS
CUMI
बेहतरीन फ़िनिश की शुरुआत यहीं से होती है
CUMI के साथ, हर सतह चमकती है और हर रचना बेहतरीन कारीगरी के गौरव को दर्शाती है
MADE IN INDIA
Complete Abrasive Solutions for Wood
Sheets, Rolls, Discs, Wood Cutting Blades, Grinding Stones, Power Tools.
Visit Our Website
CONTACT: PAWAN MISHRA
85911 57851
CONNECT WITH US TODAY
08035120000 | email@cumi.murugappa.com